सेवा समर्पण

मूल्य ₹ 20

वर्ष-41, अंक-08, कुल पृष्ठ-36, वैशाख-ज्येष्ठ, विक्रम सम्वत् 2081, मई, 2024

देश और धर्म के रक्षक महाराणा प्रताप

पाठकों से निवेदन

प्रिय पाठको!

इन दिनों यह अनुभव हम और आप प्रतिदिन कर रहे हैं। हर वस्तु का मूल्य बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। चाहे रोजमर्रा का सामान हो या लिखने-पढ़ने की सामग्री-हर चीज की कीमत कई गुनी बढ़ चुकी है। कागज महंगा हो गया है, छपाई महंगी हो गई है। पिछले दो-तीन माह से पत्रिका रंगीन छप रही है। स्वाभविक रूप से इन सबका असर आपकी लोकप्रिय पत्रिका 'सेवा समर्पण' पर भी पड़ रहा है। किन्तु पाठकों ध्यान में रखते हुए 'सेवा समर्पण' के मूल्य में पिछले कापी समय से कोई वृद्धि नहीं की गई। सुचारू रूप से चलाने के लिए पर अब लग रहा है कि यह आवश्यक है। इसलिए अब एक अंक का मूल्य 20 रु., वार्षिक 200 रु. एवं आजीवन सदस्यता शुल्क 1500 रु. किया जा रहा है। यह वृद्धि अप्रैल, 2024 के अंक से लागू होगी।

आशा है सुधी पाठक पूर्व की तरह आगे भी अपना अमूल्य सहयोग देते रहेंगे।

– सम्पादक

नववर्ष मंगलमय हो

दिनांक 9 अप्रैल 2024 को सेवा भारती (गांधी नगर जिला) स्थान एसडीएम आफिस, जनदीक बस्ती में भारतीय नववर्ष के शुभारंभ एवं चैत्र नवरात्रों के उपलक्ष्य में भजन कीर्तन का कार्यक्रम रहा। इसमें जिले से महिला समिति अध्यक्ष सविता जी, हेमा जी और निरीक्षिका/शिक्षिका उपस्थित रहीं।

चिकित्सा शिविर

गत दिनों सेवा भारती और श्रेष्ठ विहार की रेजिडेंन्टस वेलफेयर एसोसिएशन ने चिकित्सा शिविर आयोजित किया। इसमें शुगर जांच, ब्लड प्रेशर, दांतों की जांच एवं कोलेस्ट्रॉल आदि की जांच डॉक्टर द्वारा की गई। डॉक्टर मोनिका जी और शालिनी जी का जो कि 'एनएमओ' की ओर से उपस्थित रहकर सहयोग किया।

डॉ. आम्बेडकर का वंदन

बाबासाहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर की जयंती पर सेवा भारती द्वारा संचालित सीएसएसी बालवाड़ी, विष्णु भवन, बाला साहब देवरस केन्द्र, रविदास नगर, जिला-मुखर्जी नगर, झण्डेवाला विभाग, में एक कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें संस्कार केन्द्र के बच्चों ने डॉ बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर का वंदन किया।

किशोरियों के विकास पर जोर

दिनांक 10 अप्रैल को समर्थ किशोरी विकास द्वारा उत्तरी विभाग रोहिणी जिले में एक कार्यक्रम हुआ। इस अवसर पर किशोरियों को चैत्र मास, कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष के बारे में बताया गया। नववर्ष पर नए कपड़े पहनना, मंदिर जाना और सबको नववर्ष मंगलमय हो की बधाई देना यह हमारी संस्कृति है। दीदी ने बताया जिस तरह फोन का डाटा एक सीमित अवधि के लिए होता है उसी प्रकार जीवन में समय भी उसी हिसाब से खर्च करना चाहिए। सही समय पर सही कार्य करना और निश्चित समय में करना यह हमारे लिए बहुत आवश्यक है। बच्चों की 20 संख्या रही।

संरक्षक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

परामर्शदाता
डॉ. राम कुमार

सम्पादक
डॉ. शिवाली अग्रवाल

कार्यालय
सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15
E-mail: info@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर

एक प्रति : 20/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 200/-रुपये

सेवा समर्पण

वर्ष-41, अंक-08, कुल पृष्ठ-36, मई, 2024

विषय - सूची

शीर्षक	लेखक	पृ.
संपादकीय		4
देश और धर्म के रक्षक	मनवेन्द्र	5
बारहपाल में आने वाली घुमंतू जातियों का महत्व	शैलेन्द्र विक्रम	7
एकता के देवदूत	इंदिरा मोहन	11
ईश्वर का न्याय	प्रतिनिधि	14
'भारत रत्न' से सम्मानित हुए आडवाणी जी	गंगा प्रसाद सुमन	15
'कारा' की संचालन समिति में मातृछाया	प्रतिनिधि	16
चुनाव और नागरिक कर्तव्य	आचार्य अनमोल	17
ग्रीष्म ऋतु का आहार-विहार	किरण गुप्ता	19
जीवन में बड़ा लक्ष्य बनाओ	पूज्य सुधांशुजी महाराज	20
सेवापथ के साधक	सौजन्य शुकदेव	21
स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रोजेक्ट	आचार्य मायाराम पतंग	22
जीव के लिए जल बचाइए	डॉ. महेश परिमल	26
जिंदगी खुलकर जियो		28
4000 संस्कृत गृह बने	शिरीष देव पुजारी	29
निंदा के दुष्परिणाम		30
भगवान का संकेत		31
लालसा	सरोजिनी चौधरी	31
स्वास्थ्य-संसद	रंजित दीक्षित	32

पाठकों से अनुरोध

सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।

पता : संपादक, सेवा समर्पण,
13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org

बेटियों को बचाकर रखिए!

गत 19 अप्रैल को जब कर्नाटक में लव जिहाद के विरोध में हिंदू संगठनों के लोग सड़कों पर उतरे थे, ठीक उसी समय दिल्ली में एक दावत का निमंत्रण कार्ड सोशल मीडिया में तेजी से वायरल हुआ। अंग्रेजी में प्रकाशित उस कार्ड को जिस हिंदू ने भी देखा, वही दंग रह गया। दरअसल, उस कार्ड के अनुसार 20 अप्रैल को मुसलमान युवक गुलफाम और हिंदू युवती संगीता के निकाह की दावत दी जा रही थी। जैसे ही यह कार्ड वायरल हुआ, वैसे ही हिंदू समाज में हड़कंप मच गया। हिंदू संगठनों के कार्यकर्ता सक्रिय हुए और उन्होंने लड़की के घर वालों से बातचीत की। इसका असर यह हुआ कि दावत का कार्यक्रम रुक गया। भले ही दावत का कार्यक्रम रुक गया हो, लेकिन दोनों ने पहले ही 'कोर्ट मैरिज' कर रखी है।

गुलफाम शाहाबाद डेयरी में रहने वाले महबूब खान और शकरून निशा का बेटा है। इस मुस्लिम दंपति ने बड़े गर्व के साथ दावत के कार्ड को हिंदू समाज में भी बांटा। महबूब खान आजमगढ़ का रहने वाला है। उसका बेटा गुलफाम शाहाबाद डेयरी के मुख्य बाजार में कपड़े की दुकान चलाता है। संगीता की माँ सरस्वती शास्त्री और पिता रामबहादुर शास्त्री सेक्टर 28, रोहिणी में रहते हैं। कहा जा रहा है कि रामबहादुर शास्त्री नेपाल के रहने वाले हैं। पहले ये शाहाबाद डेयरी में ही गुलफाम के पड़ोस में रहते थे। कुछ दिन पहले ही ये रोहिणी आए हैं। यह भी पता चला है कि गुलफाम और संगीता बचपन से दोस्त हैं। दोनों ने पढ़ाई साथ-साथ की है। इसी का लाभ गुलफाम ने उठाया। पढ़ाई के दौरान गुलफाम ने संगीता को ऐसी पट्टी पढ़ाई कि वह उसके साथ निकाह के लिए तैयार हो गई। यह भी कहा जा रहा है कि पहले संगीता के परिवार वालों ने इस निकाह का विरोध किया, लेकिन बेटी की जिद के सामने उनकी एक नहीं चली। दोनों परिवारों की सहमति से ही दावत दी जा रही थी। इस प्रकरण में एक हैरान करने वाली बात यह रही कि कुछ हिंदू भी इस दावत में जा रहे थे। ऐसे हिंदुओं का कहना था कि मुसलमान लड़का है तो क्या हुआ! प्यार में मजहब नहीं देखा जाता है। लेकिन जब ऐसे हिंदुओं से पूछिए कि क्या प्यार एकतरफा होता है! आखिर अधिकतर हिंदू लड़कियाँ ही मुसलमानों के साथ निकाह क्यों करती हैं! यह भी देखा जाता है कि यदि कोई हिंदू लड़का किसी मुसलमान लड़की से विवाह करता है, तो उसकी जान खतरे में पड़ जाती है। लड़की के घर वाले उस लड़के की हत्या करने से भी नहीं चूकते हैं।

शायद ऐसे हिंदू तब सबक लेते हैं, जब उनके घर की बहू-बेटियों के साथ ऐसी घटना घटती है। एक ऐसे ही हिंदू हैं कर्नाटक के हुबली में रहने वाले कांग्रेस पार्षद निरंजन हिरेमठ। ये कांग्रेस पार्टी के नेता हैं, इसलिए ये लव जिहाद की अवधारणा को ही नहीं मानते थे। लेकिन अब वे चिल्ला-चिल्ला कर कह रहे हैं कि कर्नाटक में लव जिहाद बहुत अधिक बढ़ गया है। बता दें कि निरंजन हिरेमठ की बेटी नेहा हिरेमठ के साथ जो हुआ है, वह दिल दहला देने वाली घटना है। 18 अप्रैल को नेहा हिरेमठ की हत्या चाकू से गोद-गोद कर दी गई। हत्यारा और कोई नहीं उसका सहपाठी फैयाज खोंडुनायक है। फैयाज काफी समय से नेहा से निकाह करना चाहता था, लेकिन नेहा बार-बार मना कर देती थी। इस कारण फैयाज ने नेहा की हत्या दिनदहाड़े बड़ी बर्बरता के साथ कर दी। नेहा हुबली के बीवीबी कॉलेज से कंप्यूटर से एमएससी कर रही थी।

उसकी हत्या से कर्नाटक के हिंदुओं में उबाल है। 19 अप्रैल को कर्नाटक के कई शहरों में हिंदुओं ने प्रदर्शन किया और लव जिहाद की घटनाओं पर रोष व्यक्त किया। इन सबसे बेफिक्र कर्नाटक की कांग्रेस सरकार ने कहा है कि लव जिहाद जैसी कोई चीज नहीं है। नेहा की हत्या आपसी विवाद में हुई है। यानी कांग्रेस सरकार ने लव जिहादियों का ही पक्ष लिया है। इसलिए हिंदुओं को इस मामले में एकजुट होना चाहिए। इसके साथ ही हर हिंदू माता-पिता अपनी बेटियों को ऐसी सीख दें कि वे किसी बाहरी व्यक्ति के झांसे में न आएं। ❐

देश और धर्म के रक्षक

■ मनवेन्द्र

महाराणा प्रताप मेवाड़ के महाराणा उदय सिंह के सबसे बड़े पुत्र और महाराणा सांगा के पौत्र थे। प्रताप का जन्म 9 मई, 1540 ईस्वी में महाराणा उदय सिंह जी की बड़ी रानी जयवंता बाई के गर्भ से हुआ। जयवंता बाई ने प्रताप का लालन-पालन बड़े ही संस्कारित रूप से किया। बाल्यकाल में ही प्रताप को इनकी माताजी ने अपने राजवंश, हिंदू धर्म और मेवाड़ की धरती के प्रति निष्ठा बनाए रखने की शिक्षा दी थी। प्रताप अपने बाल्यकाल से ही उदार प्रवृति के राजकुमार थे। उन्होंने 'भोजन पेटी' की एक परंपरा प्रारंभ की। जो भी भोजन प्रताप और उनकी माताजी के लिए चित्तौड़ दुर्ग से आता था प्रताप उस भोजन को अपनी रक्षा मे लगे सैनिकों के साथ बैठकर करते थे।

यह काम उनसे पूर्व किसी ने भी नहीं किया था। इसका लाभ यह हुआ कि सैनिकों के मन में प्रताप के लिए सम्मान और निष्ठा बहुत बढ़ गई थी। जमीन पर बैठकर सैनिकों के साथ भोजन करने की प्रथा प्रताप ने अपने जीवनपर्यंत निभाई। इस कारण सभी उन्हें प्रेम और सम्मान की दृष्टि से देखते थे।

मेवाड़ में सदैव भील जाति का निवास था, जो वनों और पर्वतों के मध्य रहकर अपना जीवन-यापन करती थी। प्रताप ने राजपूतों और भीलों के मध्य संबंधों को नई ऊंचाइयों पर पहुंचा दिया था, जो कालांतर में बहुत लाभकारी सिद्ध हुआ। प्रताप ने राजवंश और प्रजा के मध्य जो संबंधों की दीवार होती थी उसको अपने प्रयासों से धुंधला कर दिया था। प्रताप प्रजाजन के साथ बहुत सहजता से खाना-पीना, उठना, बैठना रखने लगे थे। बाल्यकाल में ही प्रताप पास के वनों में विचरण करते और आखेट खेलते थे जिस कारण उनकी मित्रता भील बालकों से हो गई थी। प्रताप ने इससे ही वनों और पर्वतों में जीवन जीने की कला सीखी थी।

भील जाति का योगदान

मेवाड़ के महाराणा जब प्रजा को मैदानों से निकलकर पठारों की ओर पलायन का आदेश देते थे। इस नीति को 'शुष्क भूमि नीति' कहा जाता था। इस नीति का उद्देश्य शत्रु सेना को भूखा प्यासा रखना था। ऐसे विपरीत काल में भील समाज ही पूरे राज्य की जनता

का भरण-पोषण करता था। भील समाज का हिंदुओं की स्वतंत्रता में राजपूतों के समान ही महत्वपूर्ण योगदान है। हिंदू समाज को सहृदय हमारे भील पुरखों के प्रति कृतघ्न होना चाहिए।

भील प्रताप को प्रेम से 'कीका' कहते थे। इसका अर्थ होता है 'छोटा बालक'। भीलों ने ही प्रताप को अरावली पर्वत की घाटियों में रहना तथा वन में जंगली जानवरों से आत्मरक्षा करना सिखाया। इस स्थिति में अपने तथा अन्य सभी के कैसे भोजन व्यवस्था की जाती है? ये भी सिखाया। प्रताप के कहने पर ही भील समाज को मेवाड़ की सेना में भर्ती किया गया और उनको सैन्य प्रशिक्षण दिया गया। भील सेना ही बाद में प्रताप की सेना की मुख्य कड़ी बन गई थी। मुगल सेना की हर छोटी बड़ी सूचना प्रताप को पर्याप्त समय पूर्व मिल जाती थी।

युवावस्था

प्रताप लंबी चौड़ी कद काठी वाले व्यक्ति थे। उदयपुर के राजमहल में रखे कवच से अनुमान लगाया जा सकता है कि उनकी ऊंचाई 6-7 फीट रही होगी। उनकी दोनों खड्ग, भाला, उनकी बंदूक और उनका लौह कवच ये सभी कुल मिलाकर 80-90 किलोग्राम के अवश्य ही रहे होंगे। इतना भार लेकर प्रताप युद्धभूमि में जाते थे। इससे आप समझ सकते हैं प्रताप का कितना शक्तिशाली शरीर रहा होगा? प्रताप मेवाड़ के सर्वोत्तम खड्गधारियों के साथ प्रशिक्षण लेते थे। यद्यपि प्रताप को भाले का प्रयोग करना अधिक प्रिय था, क्योंकि मेवाड़ के अधिकांस युद्ध पर्वतीय क्षेत्रों में लड़े गए उसमें भाले को फेंकना, उसका दूर तक घात करना और उसका हल्का होना, प्रताप के लिए सर्वोत्तम अस्त्र के रूप में भाला रहता था।

प्रत्येक संध्या को प्रताप चित्तौड़ दुर्ग से निकलकर मेवाड़ की सेवा करने वाले एक सामान्य जन की भांति अपनी माता के पास आते, उनके साथ रहते और स्थानीय लोगों से मिलना-जुलना, संवाद करना आदि में अपना समय व्यतीत करते थे।

प्रताप का ज्ञान एवं राजकार्यो में उनकी व्यस्तताओं और अपने सैनिकों के साथ प्रेमवत व्यवहार के कारण ही प्रताप सर्वजन प्रिय हो गए थे। प्रताप की धार्मिक शिक्षा आचार्य राघवेंद्र द्वारा दी गई। मेवाड़ के ब्राह्मण शिक्षक और साधुओं के प्रति प्रताप के मन में असीम श्रद्धा थी। उन्हीं की कृपा से उन्होंने मेवाड़ राजवंश के इष्टदेव शिवस्वरूप भगवान एकलिंगजी की भक्ति का प्रसाद प्राप्त हुआ था।

हिंदू धर्म एवं उसके मूल्यों के प्रति प्रताप की प्रतिबद्धता ने भारत की जनता पर इस्लाम बलपूर्वक थोपे जाने के खिलाफ प्रताप के निश्चय को और अधिक दृढ़ बनाया था। अपने भील मित्रों के साथ वन में विचरण करते समय प्रताप की भेंट मुनि रुपनाथ जी से हुई। जो नाथ संप्रदाय से संबंधित थे। रुपनाथ जी ने ही प्रताप को सनातन धर्म की नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षाएं दीं इसके साथ ही राजनीति, राजधर्म एवं युद्धकौशल के गुर भी सिखाए।

महाराणा प्रताप के जीवन से सीख

महाराणा प्रताप का व्यक्तित्व और उनके उत्थान का रास्ता उनके बाल्यकाल और युवावस्था की अनेक घटनाओं से प्रशस्त हुआ। अपने परिवार से उपेक्षित होने के उपरांत भी विशाल हृदय कैसे रखा जाता है..? ये प्रताप के जीवन से सीखा जा सकता है। एक ऐसे राज्य में, जहां स्वतंत्रता और धर्म रक्तकणों में बहता हो, वहां के राजकुमार के रूप में कैसे अपने धर्म और कर्तव्य के पथ पर ही केंद्रित रहा जाता है..? कैसे आप तप और नियमपूर्वक जीवन जीते हुए स्वयं को सबल और सक्षम बना सकते हैं? कैसे अपनी माता, मातृभूमि और अपनी प्रजा के लिए एक पुत्र की भांति निष्ठावान रहा जा सकता है? कैसे निडर होकर धर्म की सेवा की जा सकती है? कैसे राजकुमार होने के अहंकार को त्याग एक सरल मनुष्य के रूप में अपने प्रजाजनों के साथ मिलकर आहार विहार किया जा सकता है! ये सब उच्च आदर्श हमें प्रताप के बाल्यकाल और युवावस्था में उनके व्यवहार में देखने को मिलते हैं।

जिस प्रकार पतझड़ के समय वृक्षों के पत्ते गिरते हैं और फिर नए पत्ते आते हैं, उसी प्रकार धरती पर अनगिनत मनुष्य जन्मते और मरते हैं, किंतु यदि प्रताप हमारे हृदय में अनादिकाल तक रहेंगे तो केवल इसलिए क्योंकि वे अद्वितीय महापुरुष थे जिन्होंने मेवाड़ राजवंश और हिंदू धर्म को समाप्त होने से बचाने में अपना जीवन समर्पित कर दिया। प्रताप हमेशा ही जीवित रहेंगे, क्योंकि प्रताप एक भावना है सम्मान और स्वतंत्रता की।

प्रताप ने अपने शौर्य और साहस के कारण इतिहास में अपनी अमिट छाप छोड़ी है, क्योंकि उन्होंने मानवीय मूल्यों को सदैव शिरोधार्य रखा। राजनिष्ठा, शौर्य और मातृभूमि के प्रति प्रेम को सदैव अपने रक्तकणों में समाकर जीने वाले ऐसे महापुरुष को इतिहास भी अपने सुनहरे पृष्ठों में स्थान देने को बाध्य होता है। ❐

बारहपाल में आने वाली घुमंतू जातियों का महत्व

■ शैलेन्द्र विक्रम

घुमंतू जीवन-यापन करनें वाले लोगों से सभी का परिचय हुआ होगा। प्रायः यह समाज शहरों के मुख्य मार्गो, पार्कों, नालों या खाली पड़ी जमीनों के आस - पास छोटी-छोटी झुग्गियां बनाकर रहता दिखाई दे जाएगा। संपूर्ण समाज में इन लोगों के प्रति नकारात्मक धारणा बनी हुई है। कई जगह इन्हें जरायम पेशा वाला (हत्या और लूटपाट में संलग्न) समाज कहा जाता है। कई जगह पर इन्हें कूड़ा बीनने वाला और भीख मांगने वाला समाज भी कहा जाता है। कुल मिलाकर घुमंतू समाज को समाज के सबसे निचले पायदान पर देखा जाता है। पूरे भारतवर्ष में घुमंतू समाज के अनेकों प्रकार दिखाई देते हैं। जैसे सपेरा, भांड, नट जोगी, कंडारा, लद्धड, पारदी, सबर, गाड़िया लोहार, कंजर, सपेरा व पेरना इत्यादि। भारतीय जन मानस में कई बार समय - समय पर इन घुमंतू समाज के लोगों को उनके अस्थाई वास से हटाने के लिए प्रयास किया जाता रहा है। कई बार इन्हें बेघर भी होना पड़ता है। अनेकों बार समाज के अराजक तत्वों के द्वारा इस समाज की बहनों को परेशान भी किया जाता है। अर्थात् यह समाज मूलभूत सुविधाएं से कोंसो दूरी पर स्थित दिखाई देता है।

परंतु कुछ ऐसे भी प्रबुद्ध लोग हैं जिन्होंने इन घुमंतू समाज के लोगों के जीवन स्तर में बदलाव लाने के लिए भगीरथ प्रयत्न किया है। वास्तव में भारतीय पृष्ठभूमि में घुमंतू समाज का महत्वपूर्ण स्थान है। क्योंकि सभी घुमंतू समाज के साथ अलग-अलग इतिहास जुड़ा हुआ है। कोई समाज भगवान शिव से संबंध रखता है तो कोई महाराणा प्रताप और छत्रपति शिवाजी से अपना अपना संबंध स्थापित करता है।

बारहपाल : बारहपाल के अन्तर्गत भगवान शिव से संबद्ध रखनें वाले 12 प्रकार के विशिष्ठ गोत्रों को शामिल किया जाता है। इनकी विशिष्ठता इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि ये सभी गोत्र वाले मूलतः घुमंतू समाज से संबंधित हैं। इन गोत्रों में नाथ सपेरा, बहुरूपिया भांड, ग्याहरा, कबूतरीनट, कठपुतली, जोगी, भोपा-भोपी, देया, कंडारा, वांवी, लद्धड़ व करू नामक घुमंतू जातियां शामिल हैं।

उद्देश्य- अलख की रोटी, पलक का खजाना। भूख लगे तो, मांगकर खाना।

अर्थात् समाज को जगाओ, अलख निरंजन करो। यह बताओ कि इस संसार

दिल्ली में गाडिया लोहार समाज के बच्चों के बीच वरिष्ठ प्रचारक श्री दुर्गादास राठौर (फाइल चित्र)

का सार केवल शिव है। शिव तभी मिलेंगे जब आप सभी प्रेम व निष्ठा पूर्वक अपने माता – पिता, गुरुजनों छोटे व बड़ों का सम्मान आदरपूर्वक करोगे। समाज में समता की भावना को उत्पन्न करते हुए बिना रुके दूसरे स्थान को गमन करोगे। यानी आपके लिए पलक खजाना जैसा रहेगा। मतलब पालक झपकते ही स्थान परिवर्तन करना। यदि कहीं वा कभी भूख लग जाय तो तुरंत ही समाज से मांगकर भोजन करना। तात्पर्य यह है कि घूमते रहना इनके कार्य का मूल पहलू है।

इसके पीछे मान्यता है कि जब भगवान शिव जी का विवाह हो रहा था तब उस समय समस्त ज्ञानवान प्राणियों को आमंत्रित किया गया था। सभी ने बहुत अच्छे प्रकार से वहां भोजन पाया। इस बारात में कुछ ऐसे लोग भी थे जो विभिन्न मुद्राओं वा हाव – भाव से सामाजिक जनों का मनोरंजन करते हुए आ रहे थे। इन्हे अपनी कलाबाजी दिखाते हुए काफी समय लग गया। जब ये लोग बारात में पहुंचे तब – तक भोजन समाप्त हो चुका था। इन्हें बहुत भूख लगी थी तब उन्होंने समीप में मांग कर भोजन खाया। जब भगवान शिव को यह सब मालूम हुआ तो उन्होंने इन समाज के लोगों को आदेश दिया कि आज से आप लोग विभिन्न प्रकार से समाज का जागरण और प्रबोधन करोगे। भूख लगने पर समाज से मांगकर खा लिया करना। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। तब से आज तक यह समाज भगवान शिव के दिखाएं रास्ते का अनुसरण करते हुए समाज के प्रबोधन के कार्यों में लगा हुआ है।

दिल्ली के ख्याला सपेरा बस्ती में रहने वाले किशन बहुरूपिया के अनुसार बारह पाल के इस समाज ने कई हजार वर्षो के कालक्रम में बहुत परिवर्तन देखे। हमारा संबंध भोलेनाथ से इतना मजबूत है कि हमने शिव जी से संबंधित विभन्न पंथों को अपनाकर उनके द्वारा बताए हुए रास्ते का अनुसरण अनवरत किए जा रहे हैं। इन्हें ठीक से समझने के लिए बारह पाल के समाज को समझना आवश्यक है।

सपेरा – बारह पाल के अन्तर्गत सबसे पहला समाज। गुरू गोरखनाथ जी और गुरू मत्स्येंद्रनाथ जी का पूर्ण अनुयायी। वीन बनाना व बजाना, सांप पकड़ना, सांप का खेल दिखाना व इनके जहर को कम करने वाली दवा का व्यापार करना।

सपेरों ने सांपों के माध्यम से समाज का प्रबोधन किया। भगवान भोलनाथ के प्रति आस्था पैदा करना इनका प्रमुख कार्य था। इस समाज ने मनुष्यों को प्रकृति के साथ रहने का चलन उत्पन्न किया। साथ ही यह भी बताया कि जहरीले से जहरीला प्राणी हमारा मित्र है। सांपो के माध्यम से कई असाध्य रोंगो का इलाज संभव है। परंतु हजारों वर्षो के लंबे संघर्ष के कारण आज हमारे बीच यह जानकारी ना के बराबर है। कई आदिवासी क्षेत्रों में आज भी सांपों के माध्यम से असाध्य रोग ठीक करने का चलन है। स्मरण रहे इस प्रक्रिया में सांपों की हत्या नहीं होती वरन् सांपों के निवास स्थलों की मिट्टी को वा सांपों द्वारा उत्पन्न की गई गर्मी ही असाध्य रोंगो के इलाज में सहायक होती है। सपेरा समाज को इसका बहुत अच्छा अनुभव है।

वास्तव में सपेरा समाज ने समस्त विश्व को बताया कि सांप मनुष्यों के शत्रु नहीं मित्र है। ठीक वैसे जैसे गाय, बैल, भैंस व बकरी इत्यादि जीव हमारे अस्तित्व के लिए अत्यंत उपयोगी है।

यह समाज सम्पूर्ण भारत वर्ष में झुग्गियों–झोपड़ियों में सदियों से रहता आ रहा है। एशिया की सबसे बड़ी सपेरा बस्ती पद्मकेश्वरपुर है। यह उड़ीसा राज्य के भुवनेश्वर में स्थित है। इस गांव में लगभग 500 परिवार निवास करता है।

इस समाज के साथ एक कथा सर्वप्रचलित है। भारतवर्ष के उत्तरी भाग में सर्पो के राजा वासुकी का शासन था। राजा जनमेजय नाग वंश के कट्टर विरोधी थे। दोनों के बीच कई बार युद्ध हुआ। परंतु ऋषि आस्तिक की सूझ – बूझ के कारण दोनों में समझौता हो

गया। समझौते के कारण नाग वंश को भागमती (आज का दक्षिणी अमेरिका) जाना पड़ा। आज भी दक्षिणी अमेरिका का अमेजान जंगल संसार में सबसे बड़ा है। जहां अत्यधिक विषैले सांप रहते हैं।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि सपेरा समाज न केवल भारतवर्ष में बल्कि शेष विश्व में भी अपना विशिष्ट स्थान रखता है। सपेरे जैसे अनेकों घुमंतू समाज है जो शेष विश्व में अलग - अलग नामों से जाने जाते है। लेकिन इनका मूल निवास स्थान भारत वर्ष ही है। हमें सपेरा समाज को दीन - हीन नहीं समझना है।

बहुरूपिया भांड : बारह पाल के अन्तर्गत आने वाली घुमंतू जाती। इनका दूसरा नाम- quot; ढोली राणा डूम मरासी-quot; है। इनका काम राज्य दरबारों में रूप बदल बदल कर राज्यपरिवारों, मंत्रियों, सामंतों और प्रजाजनों का मनोरंजन करना था। परंतु रूप बदलने में एक बात का ध्यान रखना आवश्यक था कि लोगों के मनोरंजन के साथ साथ धर्म के प्रति जन जागरण का भाव बना रहे। सामान्य अर्थों में इन्हें ही बावनरूपिया या जोकर भी कहा जाता है।

नट मरासी : इस घुमंतू समाज के लोग खेल संस्कृति के बहाने समाज का जागरण करते थे। जैसे रिंग से निकलना, पैर में रस्सी बांधकर खेल दिखाना आदि।

कबूतरी नट : इस गोत्र के लोगों का मुख्य कार्य बांस पर खेल दिखाना वा गली में रस्सी बांधकर संतुलन स्थापित करना है। यह परंपरा बहुत प्राचीन समय से भारत में रही है।

कंडारा : खेल संस्कृति में एक बड़ा नामी गोत्र। शिव जी से संबंधित। वहीं से निकला अद्भुत खेल। इस से संबंधित लोग हांडी को तोड़कर उसके मुंह के हिस्से में आग लगाकर थोड़ी दूरी से छलांग लगाकर निकलते हैं।

बांबी : इस गोत्र के लोग जादू का खेल (Mazic sow) य तमाशा दिखाते हैं। पूरे विश्व में जादू के खेल का यही समाज वाहक है। इसके माध्यम से इस गोत्र के लोगों ने न केवल समाज का मनोरंजन किया वरन ईश्वर के प्रति आस्था उत्पन्न करने का बहुत प्रभावशाली कार्य किया।

लद्धड़ : खेल संस्कृति का वाहक यह समाज शहरों या गांवों के मुख्य मार्गों में एक दूसरे के कंधे पर कूदते हुए फायर करते हुए सामाजिक जनों का मनोरंजन करते हैं। तात्पर्य यह है कि हमारे राष्ट्र में बहुत पहले से ही बारूद का ज्ञान था।

कारू समाज : खेल संस्कृति में एक बड़ा नाम। ये लोग एक दूसरे पर जंप करते हुए झाड़ू से एक दूसरे को मारते हैं। कालांतर में झाड़ू से मारना टोने टोटके के रूप में शामिल कर लिया गया।

कठपुतली : इन्हें भाट जी भी कहा जाता है। इनका मुख्य कार्य कठपुतली की नाच दिखाकर लोगों का मनोरंजन करना है। आज भारतीय समाज में कठपुतली वाले बड़ा प्रसिद्ध नाम है।

जोगी : इस गोत्र के लोगों ने जन जागरण की जो परम्परा सदियों पहले स्थापित की थी आज भी वह परम्परा उसी रूप में भारतीय समाज में देखी जा सकती है। इस गोत्र के लोग पीला या भगवा वस्त्र धारण करके दो, तीन या पांच लोगों के समूह में गावों और शहरों में भ्रमण करते हुए अलख निरंजन करते हैं। अर्थात् भगवान शंकर जी के प्रति लोगों की आस्था बनी रहे। भारत और भारतीयता हमेशा प्रगतिशील रहे। सभी जन स्वयं की आत्मा को ईश्वर का अंश समझें। अपनी शरीर को मंदिर जैसा समझ कर पवित्रता पूर्वक विश्व कल्याण में लगे रहें।

भोपा भोपी : इस गोत्र के लोग रावानत्था (सारंगी जैसा) वाद्य यंत्र को बजाते हुए गांवों गांवों में भ्रमण करते हैं। अपने वाद्ययंत्र पर इनके द्वारा छेड़ी गई तान भी समाज का प्रबोधन वा जागरण करती है।

देया जाति : इस गोत्र के लोग झाज (सूप) बनाते हैं। भारत में सूप और झाड़ू को लक्ष्मी माना जाता है। सूप से चावल, दाल, चना आदि के धूल या छोटे कड़ों को साफ किया जाता है। उत्तर भारत में इस प्रक्रिया को पछोरना कहते हैं। भारतीय समाज में घर में प्रयोग हेतु आवश्यक सामानों को हर कोई नही बना सकता था। प्रायः प्रत्येक सामान के निर्माण हेतु कोई विशेष जाति का निर्धारण हुआ था। हमारे गांवों में आज भी यह परंपरा देखी जा सकती है। पहले बहुत सम्मान हासिल था देया समाज को। परन्तु एक लंबे संघर्ष के कारण बहुत कुछ नष्ट प्राय जैसा हो गया था।

निष्कर्ष : वास्तव में घुमंतू समाज कोई अलग समाज नहीं है। यह समाज हमारे समाज का ही वह वर्ग है जिसने शेष समाज की भलाई के लिए अपना और अपने परिवार का निजी जीवन, सुख व सुविधाओं का त्याग कर दिया। इनके मूल में वास्तविक भारतीयता विद्यमान रही है। परिवर्तनशील युग में घुमंतू समाज के योगदान को प्रासंगिक नहीं समझा गया। इन्हे वह स्थान नहीं मिला जिनके ये हकदार थे और आज हैं भी। ❒

कौन हैं गाडिया लोहार

गाडिया लोहार समाज पर शोध कर रहे शैलेन्द्र विक्रम ने बताया कि राजधानी दिल्ली में गाडिया लोहार समाज 92 स्थानों पर रहता है। यह समाज आज भी मूल-भूत आवश्यकताओं से कोसों दूर है। इनके पास अपना कोई घर नहीं है। किसी सड़क किनारे ही रहते हैं। शौचालय, स्नान का स्थान एवं पीने का पानी आज भी इनके दैनिक संघर्ष के विषय हैं। विक्रम मानते हैं कि परम्परागत रोजगार के प्रति अत्यधिक लगाव इनकी विपन्नता का बड़ा कारण है। उल्लेखनीय है कि इस समाज के लगभग 90 प्रतिशत लोग आज भी घरेलू लोहे के सामान और खेती के औजारों को बनाते व बेचते हैं। पुरुष समाज जहां निर्माता है, वहीं इस समाज की महिलाएं अपने पति की सहयोगी व निर्मित सामान की विक्रेता हैं। इनके बच्चे कम पढ़े-लिखे हैं। इस समाज के 90 प्रतिशत बच्चे केवल 8वीं तक ही नियमित विद्यालय जाते हैं। शेष 10 प्रतिशत में से ज्यादातर लड़कियां हैं। विक्रम ने बताया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओं की गतिविधियों के परिणामस्वरूप आज इस समाज में शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलम्बन एवं समरसता के क्षेत्र में रचनात्मक परिवर्तन आया है। यह परिवर्तन इस समाज के लिए बहुत ही जरूरी है।

विक्रम के अनुसार गाडिया लोहार समाज का संबंध महाराणा प्रताप के नेतृत्व वाले हल्दी घाटी के युद्ध से है। उस युद्ध में महाराणा प्रताप की सेना ने मुगलों को भारी क्षति पहुंचाई थी। मुगल सैनिक गाजर-मूली की तरह काटे जा रहे थे। इसके बाद मुगलों ने अन्य राजाओं के सहयोग से अपने सैनिकों की संख्या बढ़ा ली। इसके बाद महाराणा प्रताप ने छापामार युद्ध करने की नीति बनाई। इस रणनीति के अंतर्गत राजपूत, भील एवं अन्य समाज के बहुत सारे लोगों ने महाराणा की ओर से युद्ध लड़ने की घोषणा की। वहीं गाडिया लोहार समाज एक मात्र ऐसा समाज था, जिसने अपने पूरे कुनबे के साथ युद्ध में हिस्सा लिया। इसके साथ ही इस समाज ने यह भी प्रण लिया कि जब तक महाराणा प्रताप विजयी नहीं होंगे, तब तक वे लोग पांच कार्य नहीं करेंगे। ये पांच कार्य हैं-चित्तौड़ दुर्ग पर नहीं चढ़ेंगे, घर बनाकर नहीं रहेंगे, खाट पर नहीं सोएंगे, दीपक नहीं जलाएंगे और कुंए से पानी खींचने के लिए रस्सा नहीं रखेंगे। विक्रम कहते हैं कि इतना बड़ा प्रण कौन ले सकता है! इसका उत्तर वही इन शब्दों में देते हैं, ''एक देशभक्त समाज ही ऐसा प्रण ले सकता है। यह कोई साधारण प्रण नहीं है और सबसे बड़ी बात आज भी वे इस प्रण से बंधे हैं। लेकिन अब पुरानी बातों को छोड़कर आगे बढ़ने का समय है। इसलिए इस समाज के कुछ लोग स्थाई रूप से कहीं रहकर अपने बच्चों को पढ़ाने लगे हैं।''❒

एकता के देवदूत

■ इंदिरा मोहन

वेद भारतीय संस्कृति और सनातन धर्म का मूल है जिसने हर युग में मानव धर्म तथा तत्वज्ञान के द्वारा सृष्टि और उसके निर्माता की जड़ तक पहुँचने का अमोघ मार्ग प्रशस्त किया है। आज से लगभग 1300 वर्ष पूर्व जगतगुरु शंकराचार्य के अवतरण ने उपनिषद आधारित अद्वैत दर्शन के द्वारा सनातन धर्म को नई ऊर्जा प्रदान की जिसके बल पर देश विभिन्न मत-मतान्तरों के भेद-भाव से उबर सका। उस समय एक ओर तो बौद्ध विचारधारा का बाहुल्य था तो दूसरी ओर तंत्र मंत्र और कर्मकांड का बोलबाला था। पंडित वर्ग अपनी-अपनी शिष्य मंडली के साथ दूसरों की आलोचना में व्यस्त थे। ग्रन्थों की गरिमा बुद्धिवादी विभाजन में फंस गई थी। ऐसी विषम स्थिति में आचार्य शंकर ने 'एका ब्रह्म एक सत्य' आधारित चिंतन द्वारा सनातन धर्म के पुनरुत्थान का संकल्प लिया। वे राष्ट्र की एकता-अखंडता के प्रति समर्पित चिंतक और कर्मठ योगी के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

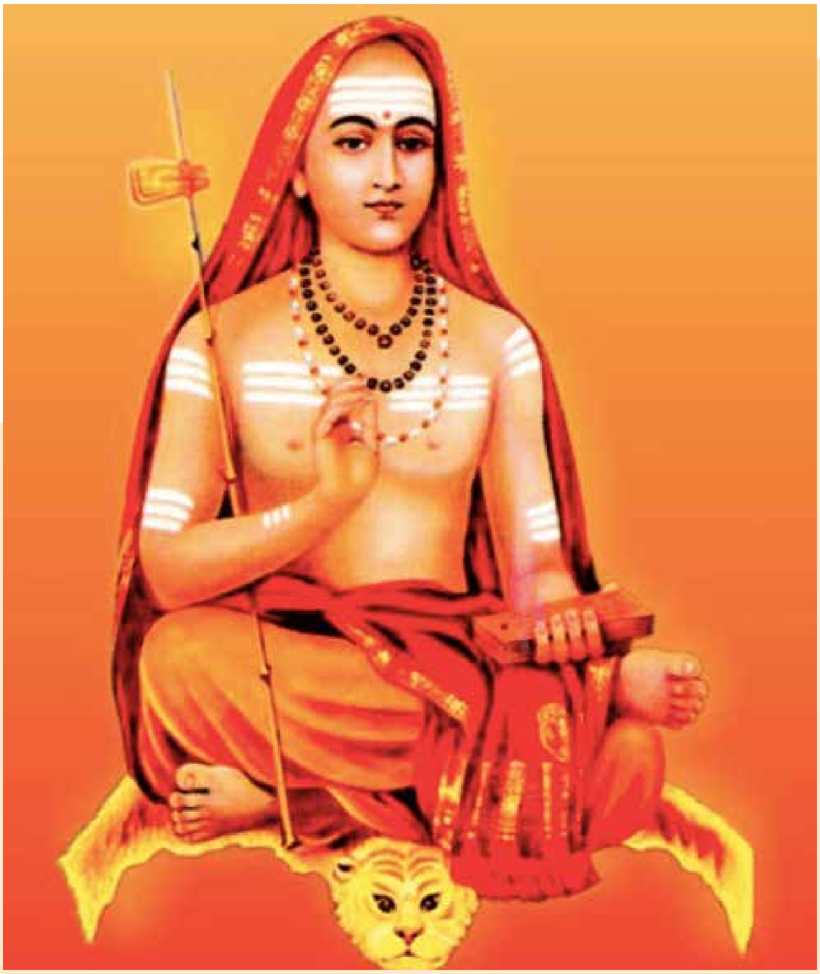

सुदूर दक्षिण केरल प्रदेश के पेरियार (पूर्णा नदी) के तट पर स्थित कालटी ग्राम में सन् 788 ई. में शंकर का जन्म हुआ था। नम्बूदरी ब्राह्मणों का यह क्षेत्र हिन्दू संस्कृति, वेदांत और सनातन ध र्मप्रेमियों का गढ़ हुआ करता था। मात्र 8 वर्ष की आयु में माता आर्यम्बा से आज्ञा ले, संन्यास ग्रहण करने गुरु की खोज में निकल पड़े। स्थानीय लोगों से पूछते-पूछते वे मध्य प्रदेश के ओंकारेश्वर के निकट नर्मदा तट पर वेदांत विद्वान आचार्य गोविंद पाद की शरण में पहुँचे। हाथ जोड़, नेत्र मूंदे वे शान्तभाव से खड़े रहे। कुछ देर बाद आचार्य समाधि से उठे। अलौकिक तेज से युक्त बालक देखा-कौन हो? कहाँ से आए हो? प्रणाम कर शंकर ने अपना परिचय दिया- 'मैं न तो पृथ्वी हूँ ना जल, ना अग्नि, ना आकाश और ना ही कोई अन्य पदार्थ। मैं इन्द्रिय भी नहीं हूँ और ना ही मन। मैं शिव हूं, चेतना का अविभाज्य सार।' आचार्य ने विधिवत संन्यास दीक्षा दे उपनिषद तथा ब्रह्मसूत्रों का विशद अध्ययन कराया। ब्रह्म विद्या का दिव्य ज्ञान प्राप्त कर गुरु आज्ञा से वैदिक धर्म के प्रचार के लिए वे काशी की ओर निकल पड़े।

यात्राओं के बीच अनेक देवी-देवताओं के पुजारी आचार्य से मिले। सामान्य जनता चित्र-विचित्र मान्यताओं में फंसी धर्म से विमुख थी। वे अपने इष्ट को ही सर्वस्व

समझते थे। आचार्य ने देश की समस्याओं को समझा और उसके अनुकूल समाधान खोज निकाले। उन्होंने अनुभव किया कि हर प्रांत भौगोलिक सम्पदा और सांस्कृतिक विरासत से भरा पूरा है। यह विविधता ही भारतीय सनातन धर्म का ऐश्वर्य है अत: किसकी प्रमुखता और कैसी प्रमुखता? वे समझ गए कि इस बाहरी विभिन्नता को ''सर्वम् खलु इदम् ब्रह्म'' के चिन्तन द्वारा एकता के सूत्र में बाँधना होगा। आचार्य ने किसी देवी-देवता का खंडन नहीं किया। लोगों की श्रद्धा को कमजोर किए बिना श्रद्धा का केन्द्र बदल दिया। अपने सत्संग के दौरान वे जनता को, पंडितों को समझाते कि भिन्न-भिन्न पूजा उस एक भगवान की ही भक्ति है।

इस उपदेश के कारण लोगों को अपनी आस्था न छोड़ते हुए भी बड़ा लक्ष्य मिल गया। आचार्य उन्हें समझाते कि परमात्मा की शक्ति सब जगह एक सी है, जड़-चेतन में वही रमा हुआ है अत: भेदभाव कैसा? इस चिन्तन को सुदृढ़ करने के लिए पंचायतन पद्धति का प्रचार किया। अद्वैत को प्रमुखता देते हुए भी उन्होंने विष्णु, शिव, शक्ति, गणपति और सूर्य पर स्त्रोत लिख भक्ति के भंडार को समृद्ध किया।

भगवान भाष्यकार आचार्य शंकर का जीवन अनोखी, अनहोनी घटनाओं से भरा है किन्तु उनका सबसे मधुर पक्ष है मातृभक्ति। ऐसी करुणामयी माँ की ममता को वे कैसे भूल सकते थे जिसने जगत के मंगल के लिए अपने एकमात्र पुत्र को संन्यास की अनुमति दी। आचार्य ने भी परंपरा के विरुद्ध, अपनी माँ की इच्छानुसार स्वयं माँ का अंतिम संस्कार किया।

आदि गुरु ने कभी छोटे-बड़े, छूत-अछूत को नहीं माना। काशी प्रवास में अपने दैनिक क्रम के अनुसार एक बार वे शिष्यों सहित स्नान करने गंगा-तट जा रहे थे। अचानक चार कुत्तों सहित एक चाण्डाल मार्ग में सामने से आया। शिष्यों ने कहा- गच्छदूरम् यानी दूर हटो, दूर रहो। चाण्डाल ने तत्काल उत्तर दिया- यह आडम्बर कैसा?

किसको दूर हटने को कह रहे हो? यदि शरीर को, तो सबके अवयव एक से हैं। सबकी रचना एक सी है। शरीर सत्य नहीं माया है, उसके धोखे में पड़कर अभेद के नाम पर भेद की दृष्टि। यदि आप आत्मा को दूर हटाने को कह रहे हो, तो वह सब शरीरों में एक सी है, निर्लेप है। किसी के छूने से वह अपवित्र कैसे हो सकती है?

आचार्य को समझते देर न लगी कि ब्रह्मा से चींटी पर्यन्त एक ही अखंड अनन्त ब्रह्म है, जिसने उसको समझ लिया, वह मेरा गुरु है। सूर्य की छाया चाहे गंगा में पड़े या नाले में, मैली नहीं होती। आचार्य ने 'मनीषा पंचक' कृति के द्वारा इन प्रश्नों का श्रुति सम्मत उत्तर दिया है।

आचार्य के दर्शन का मुख्य आधार है ब्रह्म जो सर्वव्यापी है, ब्रह्माण्ड में हर ओर फैली परम-शक्ति है। ब्रह्म ही असीमित ऊर्जा है, शुद्ध चेतना और शुद्ध ज्ञान है। इसकी एकरूपता में कोई विभाजन नहीं इसे परिभाषित करने की कोशिश उसकी अनन्ता को सीमित कर देगी। उपनिषद के शब्दों में 'सत्यं ज्ञान अनन्तं ब्रह्म'। नाम और रूप अनन्त हो सकते हैं लेकिन कारण एक है, अपरिवर्तनीय है। सब जगह उस तत् को देखना है, समझना है और कहना है। जैसे सोने का जेवर बना हुआ होने पर भी सोना है, टूट जाने पर भी सोना ही होता है।

आचार्य ने हिन्दू सनातन धर्म के पुनर्जागरण एवं लोक कल्याण के लिए उपनिषदों पर सुबोध भाष्य लिखे। साथ ही प्रकरण ग्रन्थ एवं विभिन्न स्तोत्रों द्वारा संस्कृत साहित्य को समृद्ध किया। वे अपनी बात पहले सूत्र रूप में रखते हैं फिर उसका विस्तार करते हैं। उनके अद्वैत सिद्धांत का मूलमंत्र निम्न श्लोक है- ''ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापर:।'' उपनिषदों के आधार पर आचार्य ने घोषणा की कि ब्रह्म सत्य है, संसार और उसके पदार्थ मिथ्या हैं, जीव ब्रह्म के अतिरिक्त कुछ नहीं। उस दिव्य से पृथक कुछ भी नहीं। संसार तो केवल उसकी

अनंता और पूर्णता का नमूना मात्र है। जैसे दीपक को अपने आप को प्रकाशित करने के लिए किसी अन्य दीपक की जरूरत नहीं, उसी प्रकार से ज्ञानरूप आत्मा को जानने के लिए किसी अन्य ज्ञान की जरूरत नहीं है। उनके अनुसार आत्मा सभी जीवों में ब्रह्म के अंश-स्वरूप विद्यमान है, यानि वह ब्रह्म से पृथक न होकर ब्रह्म का ही अंश है। जिस प्रकार अनेक नदियाँ विभिन्न राहों से चल कर सागर में लीन होती हैं। उसी तरह आत्माएँ भी ईश्वर में समाहित हो जाती हैं। परम तत्व की एकता में सारी सीमाएं ध्वस्त हो जाती हैं, दूरियाँ मिट जाती हैं। आंतरिक शक्तियों के जागरण से एकता पुष्ट होती है। अत: द्वैत कैसा और भेदभाव कैसा? बाह्य भेद तो केवल नाम-रूप के कारण दिखाई देता है- ''चिदानन्द रूप: शिवोहं शिवोहम्।''

अपने असली स्वरूप को पहचानो- तुम केवल पंचभूतों से बने शरीर, इन्द्रिय, मन, बुद्धि नहीं। इन सबसे परे सच्चिदानन्द स्वरूप हो। अत: मुक्ति के अधिकारी हो। यहाँ वर्ण-आश्रम, जाति-पाति तथा स्त्री-पुरुष का भेदभाव नहीं है। यह मार्ग सबका है, सबके लिए है। आचार्यपाद की करुणा ने सबको कृतार्थ किया। दक्षिण सागर से उत्तर हिमालय तक, अनेक मत-सम्प्रदायों को अद्भुत ज्ञान की एकात्म दृष्टि देकर सबमें समन्वय स्थापित किया। असंख्य शिष्य मंडली के साथ वे शहर-गाँव घूमते, विद्वानों के साथ शास्त्रार्थ करते, मंदिरों का पुनरुद्धार करते। जन-जन के मध्य वे देवी-देवताओं की वन्दना करते। उनके साथ न सेना थी न कोई संगठन। शंकराचार्य की यह दिग्विजय यात्रा उनके अदम्य साहस, धैर्य और जिजीविषा की अनूठी मिसाल है जो विश्व में अन्यत्र नहीं मिलती। भारत के आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक उत्कर्ष को समय की रेत में फिसलने से बचाए रखने के उद्देश्य से आपने प्रमुख तीर्थ क्षेत्रों में मठों तथा उपपीठों की स्थापना की। पूर्व में जगन्नाथपुरी स्थित गोवधनमठ, उत्तर में बदरिकाश्रम में ज्योर्तिमठ, पश्चिम में द्वारकापुरी में शारदामठ और दक्षिण में श्रृंगेरी मठ। इस दूरदर्शिता के कारण भारत की चारों दिशाएँ विभिन्नता और विविधता के बीच एकता में बंधी रहीं। आज भी प्रत्येक भारतीय वहाँ जाने की अभिलाषा रखता है। विभिन्न हिन्दू जाति-प्रजातियों को एकत्र कर 'दशनामी' सम्प्रदाय की शुरुआत की तथा चारों मठों में शंकराचार्यो की परम्परा आरम्भ की, जो आज भी जारी है।

उन्होनें सारे राष्ट्र को वैदिक दृष्टि से देखा, परखा और आत्मसात किया। उनके ग्रंथों में कहीं भी जिक्र नहीं है कि वे किस प्रांत के हैं। विभिन्न प्रान्तीय भाषाएँ होने पर भी संस्कृत देववाणी में ही अपने को केन्द्रित किया। वेदांत के तीन प्रमुख स्त्रोत हैं- पहला सारे उपनिषद, दूसरा वेदव्यास द्वारा रचित ब्रहासूत्र और तीसरा श्रीमद्भगवतगीता। इन तीनों की एकवाक्यता अद्वैतवाद में है जहाँ उपनिषद वाक्यों का समन्वय एकमात्र अद्वितीय ब्रह्म में दिखाया गया है। 'ब्रह्मसूत्र' ग्रन्थ का आरम्भ ही आचार्य ब्रह्म जिज्ञासा से करते हैं- 'अथातो ब्रह्म जिज्ञासा'। प्रश्न उठता है कि ब्रह्म का लक्षण क्या है? उत्तर देते हैं- 'जन्माद्यस्य यत:' इस जगत की उत्पत्ति, स्थिति तथा लय जिससे होता है वह ब्रह्म है। 'शास्त्रयोनित्वात्'-ब्रह्म के यथार्थ स्वरूप ज्ञान में शास्त्र ही प्रमाण है जिसे गुरु-शिष्य की आगम परंपरा के द्वारा जाना जाता है।

शंकराचार्य भी भगवान कृष्ण के कथन को धारण करते हुए गीता भाष्य में कर्मयोग को संन्यास हेतु सहयोगी साधन मानते हैं। उपनिषद एवं वेद के मूल तत्वों पर आधारित गीता स्वयं श्रीकृष्ण की वाणी है। अत: महत्व और भी अधिक है। आज विश्व में वैदिक सनातन हिन्दू धर्म की प्रतिष्ठा, वेदों के प्रति श्रद्धा, ज्ञान के प्रति आदर जो कुछ भी दिख पड़ता है उसका श्रेय आचार्य और उनके शिष्यों को जाता है। आचार्य का अद्भुत दर्शन प्रत्येक युग में, प्रत्येक प्राणी के लिए असत् से सत् की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से अमृतत्व की ओर जाने की प्रबल प्रेरणा है।

आज वैज्ञानिक दृष्टि भी द्वैतवाद से अद्वैत की ओर, एकात्मता की ओर बढ़ने लगी है। शंकराचार्य के दर्शन को समझने के बाद सारी विविधता का स्वागत है। सत् तो सबका अधिष्ठान है, सबका आश्रय, सबका यथार्थ है- सबमें माला के धागे की भाँति है। गीता में कहा गया है- 'सूत्रे मणिगणा इव।' यही अद्वैत की महिमा है जहाँ एकता ही एकता है, समन्वय ही समन्वय है। सम्पूर्णता में ही आनन्द है। पूर्ण की रचना तो पूर्ण ही होगी। यहाँ दो ज्ञान, दो मार्ग, दो स्थान नहीं। यह तो पूर्णता की यात्रा है, बिन्दु से सागर होने की यात्रा है।

हमारे देश का यह अमृत काल है। आइए क्यों न हम सब आचार्य शंकर के एकात्म दर्शन के द्वारा आत्मबोध के अमृत घट को अपने भीतर ढूंढें जो छलकने को आतुर है। यही है परिपूर्णता का सन्देश, जहाँ है सबका समावेश। ❒

(लेखिका शांकरभाष्य पुस्तक की रचनाकार हैं)

ईश्वर का न्याय

■ प्रतिनिधि

एक दिन मार्ग में एक महात्मा जी अपने शिष्य के साथ भ्रमण पर निकले। गुरुजी को ज्यादा इधर-उधर की बातें करना पसंद नहीं था, कम बोलना और शांतिपूर्वक अपना कर्म करना ही गुरू जी को प्रिय था। परंतु शिष्य बहुत चपल था, उसे सदैव इधर-उधर की बातें ही सूझती, उसे दूसरों की बातों में बड़ा ही आनंद आता था। चलते हुए जब वो तालाब से होकर गुजर रहे थे, तो उन्होंने देखा कि एक धीवर नदी में जाल डाले हुए है।

शिष्य यह सब देख खड़ा हो गया और धीवर को 'अहिंसा परमोधर्म' का उपदेश देने लगा। किन्तु धीवर कहाँ समझने वाला था, पहले उसने टालमटोल करनी चाही और बात जब बहुत बढ़ गयी तो शिष्य और धीवर के बीच झगड़ा शुरू हो गया। यह झगड़ा देख गुरूजी जो उनसे बहुत आगे बढ़ गए थे, लौटे और शिष्य को अपने साथ चलने को कहा एवं शिष्य को पकड़कर ले चले। गुरूजी ने अपने शिष्य से कहा- बेटा हम जैसे साधुओं का काम सिर्फ समझाना है, लेकिन ईश्वर ने हमें दंड देने के लिए धरती पर नहीं भेजा है!

शिष्य ने पूछा- महाराज को न तो बहुत से दण्डों के बारे में पता है और न ही हमारे राज्य के राजा बहुतों को दण्ड देते हैंण तो आखिर इसको दण्ड कौन देगा?

शिष्य की इस बात का उत्तर देते हुए गुरूजी ने कहा- बेटा! तुम निश्चिंत रहो इसे भी दण्ड देने वाली एक अलौकिक शक्ति इस दुनिया में है जिसकी पहुँच सभी जगह है- ईश्वर की दृष्टि चारों ओर है और वो सब जगह पहुँच जाते हैं। इसलिए अभी तुम चलो, इस झगड़े में पड़ना गलत होगा, इसलिए इस झगड़े से दूर रहोण्!

शिष्य गुरुजी की बात सुनकर संतुष्ट हो गया और उनके साथ चल दिया। इस बात को ठीक दो वर्ष ही बीते थे कि एक दिन गुरूजी और शिष्य दोनों उसी तालाब से होकर गुजरे, शिष्य भी अब दो साल पहले की वह धीवर वाली घटना भूल

चूका थाण्

उन्होंने उसी तालाब के पास देखा कि एक चुटीयल साँप बहुत कष्ट में था उसे हजारों चीटियाँ नोच-नोच कर खा रही थीं...

शिष्य ने यह दृश्य देखा और उससे रहा नहीं गया, दया से उसका ह्रदय पिघल गया था। वह सर्प को चींटियों से बचाने के लिए जाने ही वाला था कि गुरूजी ने उसके हाथ पकड़ लिए और उसे जाने से मना करते हुए कहा-बेटा! इसे अपने कर्मों का फल भोगने दो... यदि अभी तुमने इसे रोकना चाहा तो इस बेचारे को फिर से दूसरे जन्म में यह दु:ख भोगने होंगे क्योंकि कर्म का फल अवश्य ही भोगना पड़ता है।

शिष्य ने गुरूजी से पूछा- गुरूजी इसने कौन-सा कर्म किया है जो इस दुर्दशा में यह फँसा है? गुरू महाराज बोले- यह वही धीवर है जिसे तुम दो वर्ष पूर्व इसी स्थान पर मछली न मारने का उपदेश दे रहे थे और वह तुम्हारे साथ लड़ने के लिए आग-बबूला हुआ जा रहा था। वे मछलियाँ ही चींटी हैं जो इसे नोच-नोचकर खा रही हैं। यह सुनते ही बड़े आश्चर्य से शिष्य ने कहा- गुरूजी, यह तो बड़ा ही विचित्र न्याय है। गुरुजी ने कहा- बेटा! इसी लोक में स्वर्ग-नरक के सारे दृश्य मौजूद हैं, हर क्षण तुम्हें ईश्वर के न्याय के नमूने देखने को मिल सकते हैं। चाहे तुम्हारे कर्म शुभ हो या अशुभ उसका फल तुम्हें भोगना ही पड़ता है।

इसलिए ही वेद में भगवान ने उपदेश देते हुए कहा है- अपने किये कर्म को हमेशा याद रखो, यह विचारते रहो कि तुमने क्या किया है, क्योंकि ये सच है कि तुमको वहाँ भोगना पड़ेगा...

जीवन का हर क्षण कीमती है इसलिए इसे बुरे कर्म के साथ व्यर्थ जाने मत दो। अपने खाते में सदैव अच्छे कर्मों की बढ़ोत्तरी करो क्योंकि तुम्हारे अच्छे कर्मों का परिणाम बहुत सुखद रूप से मिलेगा।

इसका उल्टा भी उतना ही सही है, तुम्हारे बुरे कर्मों का फल भी एक दिन बुरे तरीके से भुगतना पड़ेगा। इसलिए कर्मों पर ध्यान दो क्योंकि वो ईश्वर हमेशा न्याय ही करता है। ❐

'भारत रत्न' से सम्मानित हुए आडवाणी जी

■ गंगा प्रसाद सुमन

भारत की राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मू ने 31 मार्च 2024, रविवार को बीजेपी के दिग्गज नेता तथा महत्वपूर्ण हस्ताक्षर श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी को उनके निवास पर जाकर भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' प्रदान किया। इस अवसर पर उप-राष्ट्रपति जगदीश धनखड़, प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह जी, गृहमंत्री अमित शाह जी आदि प्रमुख हस्तियां उपस्थित थीं।

भारत के विकास में और अपनी पार्टी को शिखर तक ले जाने वाले लौह पुरूष आडवाणी जी का प्रमुख स्थान रहा है। आपने सत्तर साल से अधिक देश सेवा और समर्पण भाव के कीर्तिमान स्थापित किए है। अविभाजित भारत के कराची, सिन्ध प्रान्त (अब पाकिस्तान) में 8 नवम्बर 1927 को आपका जन्म हुआ। आपका परिवार विभाजन के बाद सितम्बर 1947 को भारत आ गया था।

श्री आडवाणी जी जून 2002 से 2004 तक उप-प्रधानमंत्री रहे और अक्टूबर 1999 से मई 2004 तक केन्द्रीय गृहमंत्री के पद पर सुशोभित रहे। आप वाजपेयी सरकार के प्रमुख चेहरा बने रहे। आप अप्रैल 1970 में राज्य सभा में कदम रखा मई 1986 में बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने। सन् 1990 में आपकी रथ यात्रा को जनता का पूर्ण समर्थन मिला बीजेपी पहली बार उत्तर प्रदेश जैसे विशाल राज्य में अपने दम पर आपके नेतृत्व में सत्ता में आई।

विश्व हिन्दू परिषद की ओर से काशी, मथुरा, अयोध्या के मंदिरों को लेकर जो अभियान चलाया गया उसमें आडवाणी जी की भूमिका स्मरणीय रहेगी। सोमनाथ यात्रा आपकी कभी भुलाई नहीं जा सकती।

सन् 1989 की लोकसभा चुनाव जीतने के बाद आप 7 बार लोकसभा सांसद बने। राम मंदिर, बीजेपी पार्टी का नेतृत्व और आपकी प्रखर विचारधारा का विराट योगदान है जिसे शब्दों में समाहित नहीं किया जा सकता। भारत की एका, अखण्डता विकास और सांस्कृतिक उत्थान और अक्षुण्ता बनाए रखने के लिए भारत की राजनीति में अपनी मौलिक वियार धारा स्थापित करते रहे है।

आप 14 वर्ष की आयु में एक स्वयं सेवक के रूप में आरएसएस में शामिल हुए थे। आपका आदर्श रहा है 'इदं न मम्' मेरा कुछ नही हैं, यह शरीर भी देश के लिए समर्पित है। 90 के दशक में राम मंदिर का सबसे मुखर चेहरा आडवाणी जी रहे हैं। राम मंदिर से पुराना नाता रहा है। 1989 में बीजेपी ने राम मंदिर के प्रस्ताव का पहली बार समर्थन किया, जिस पालमपुर प्रस्ताव में इस पर मोहर लगी उस समय आडवाणी जी पार्टी अध्यक्ष थे। वर्ष 1984 में केवल दो लोक सभा सीट जीतने वाली पार्टी आज वर्तमान में एक मजबूत और बहुमत सरकार सफलता पूर्वक चला रही है। जिसकी आधार शिला में आडवाणी जी नींव के पत्थर हैं।

भारत के यशस्वी, कर्मठ, सेवाभावी, राष्ट्र के प्रति समर्पित जीवन, नक्षत्र की भांति देदीप्यमान व्यक्तित्व को भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' प्रदान कर सरकार ने सही कदम उठाया है, जिसके वे पूर्णतया अधिकारी हैं। नि:सन्देह स्वागत है। आडवाणी जी को दीर्घ जीवन और सुस्वास्थ्य की मंगल कामनाएं है जिससे हमें सार्थक नेतृत्व मिलता रहे। शुभम। ❐

'कारा' की संचालन समिति में मातृछाया

■ प्रतिनिधि

सेवा भारती मातृछाया की सेवाओं को मान्यता देते हुए भारत सरकार के महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने सेन्ट्रल एडॉप्शन रिसोर्स अथॉरिटी (CARA) की 10 सदस्यीय संचालन समिति में मातृछाया को स्थान प्रदान किया है। इस उपलब्धि को लेकर सेवा भारती मातृछाया के सभी कार्यकर्ता गौरव का अनुभव कर रहे हैं।

सेवा भारती मातृछाया, मियांवाली नगर मातृ स्नेह से वंचित निराश्रित और बेसहारा शिशुओं को आश्रय प्रदान कर उनके पालन-पोषण करने हेतु तथा नि:संतान दंपतियों को शिशु देकर उनके जीवन में खुशियों और आशाओं का नवप्रभात लाने वाली एक संस्था के रूप में ख्यातिमान है। सेवा भारती मातृछाया मियांवाली के प्रेरणास्रोत स्व. श्री दौलतराम आहुजा जी एक प्रख्यात समाजसेवी थे। 22 मई, 2002 को भारत के तत्कालीन उपप्रधानमंत्री माननीय श्री लालकृष्ण आडवाणी द्वारा सेवा भारती मातृछाया का उद्घाटन किया गया था। उद्घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता दिल्ली के तत्कालीन उपराज्यपाल श्री विजय कपूर द्वारा की गई थी।

पिछले दो दशक से अधिक समय से चल रहा यह प्रकल्प, ऐसे बेसहारा शिशुओं को आश्रय देने का काम करता है, जिनको माता-पिता का साथ नहीं मिलता अथवा अन्यान्य कारण ों के कारण उनके माता-पिता उनका परित्याग कर देते हैं। यह संस्था वास्तव में नि:संतान दंपतियों तथा मासूम बेसहारा शिशुओं के बीच एक सेतु की तरह कार्य करती है। इसके लिए केन्द्र सरकार की व्यवस्था के अनुरूप 'कारा' के नाम से एक प्राधिकरण अस्तित्व में है। शिशु गोद लेने के इच्छुक दंपति बच्चों के पालन-पोषण कर सकने वाले तथा नि:संतान दंपतियों को इसी व्यवस्था के आधार पर उनकी बारी के साथ कानूनी प्रक्रिया द्वारा शिशु गोद दिया जाता है।

पिछले लम्बे समय से सेवा भारती मातृछाया के द्वारा 'कारा' के साथ मिलकर समय-समय पर कारा समेत विभिन्न सरकारी एजेंसियों के साथ सहयोग में आगे रहते हुए सेवा भारती मातृछाया, मियांवाली नगर ने एक विशेष स्थान हासिल किया है। अत्यंत गर्व का विषय है कि विभिन्न कठिनाइयों और गंभीर रूप से बीमारग्रस्त बच्चों को भी आश्रय प्रदान करते हुए उन्हें स्वस्थ रखने और उन्हें उनके नए घर दिलाने में मातृछाया सरकार की विभिन्न संस्थाओं के बीच एक विशेष स्थान रखती है।

सेवा भारती मातृछाया मियांवाली नगर, सात यशोदाओं, अनेक पालक कार्यकर्ताओं के सहयोग के साथ अपने कार्य और उद्देश्यों के प्रति सदैव सजग, संवेदनशील और समर्पित है। अभी तक कुल 354बच्चों को सेवा भारती मातृछाया मियाँवाली के माध्यम से गोद दिया गया है। यही नहीं अभी तक ऐसे 53 शिशु जो किसी कारण अपने माता-पिता से बिछुड़ गए थे, उन्हें अपने माता पिता से मिलाने का पुण्य कार्य भी किया है। भारत सरकार द्वारा सेवा भारती मातृछाया मियाँवाली नगर को जो मान्यता दी गई है, उससे संस्था के कार्यकर्ताओं पर दायित्व और बढ़ गया है। इसके प्रति वे अपनी जिम्मेवारी को समझते हुए पूरी तन्मयता से कार्य करेंगे। ❐

प्रयास एवं प्रसाद

कर्म रूपी प्रयास और भगवद् कृपा रूपी प्रसाद का संतुलन ही जीवन की परिपक्वता एवं श्रेष्ठता है। प्रभु कृपा के बल पर किये गये कर्म का परिणाम जीवन को कभी निराश और हताश नहीं होने देगा। जीवन में जो लोग केवल पुरुषार्थ पर विश्वास रखते हैं प्राय: उनमे परिणाम के प्रति असंतोष बना रहता है और जो लोग केवल भाग्य पर विश्वास रखते हैं उनके अकर्मण्य होने की सम्भावना भी बनी रहती है। पुरुषार्थ को इसलिए मानो ताकि तुम केवल भाग्य के भरोसे बैठकर अकर्मण्य बनकर जीवन प्रगति का अवसर ना खो बैठें और भाग्य को इसलिए मानो ताकि पुरुषार्थ करने के बावजूद मनोवांछित फल की प्राप्ति ना होने पर भी आप उद्विग्नता से ऊपर उठकर संतोष में जी सकें। ❐

चुनाव और नागरिक कर्तव्य

■ आचार्य अनमोल

इस देश के मूल निवासी हिंदू हैं और इन्हीं के कारण यह देश हिंदुस्तान कहलाता है। हमारे ऋषि-मुनियों का देश है तो वास्तव में यह देश हिंदुओं का है। भले ही देश 1947 में स्वतंत्र हुआ लेकिन हमारी संस्कृति हजारों हजारों वर्ष पुरानी है। भगवान राम, भगवान कृष्ण, गुरु नानक, महावीर की धरती है और हम सभी उनके अनुगामी हैं। वास्तव में भारत की मूल आत्मा उसकी संस्कृति में विराजमान है। जब तक संस्कृति का संरक्षण नहीं होगा तब तक यह देश पूर्ण रूप से विकसित नहीं कहा जा सकता। उपर्युक्त सभी बातों को ध्यान में रखकर यह कहा जा सकता है कि भारत के संरक्षण संवर्धन के लिए पाँच परिवर्तन अवश्य होने चाहिए-

1. समरस समाज- हमें आज समय की स्थिति को बहुत अच्छी तरह समझना चाहिए। पहले जब देश गुलाम था, तब हमारे ऊपर बहुत अत्याचार हुए। उन अत्याचारों के कारण देश विभिन्न वर्गों में बँट गया, विभिन्न जातियों में बँट गया। अब देश में बची हुई ऊँच-नीच की भावना को दूर करना चाहिए। सभी एक समान हैं। समाज में समरसता रहेगी तो परस्पर प्यार भी बहुत रहेगा। समरसता रहने से ही दूषित भावना वाले लोग धर्म परिवर्तन कराने में सफल नहीं हो पाएँगे। देश में इस्लामी आक्रांताओं के शासन में शोषण से बचने के लिए, उनसे अपनी सुरक्षा करने के लिए अनेक कुरीतियाँ बन गई थीं। समाज में बाल विवाह जैसी प्रथा चालू हो गई, सती प्रथा शुरू हुई, पर्दा प्रथा, घूँघट प्रथा और समाज में गहराई से जाति प्रथा बढ़ने लगी।

2. भारत की परिवार व्यवस्था- भारत की परिवार व्यवस्था हिंदू जीवन मूल्य आधारित होनी चाहिए। आज परिवारों में विघटन हो रहे हैं। संयुक्त परिवारों की जगह एकल परिवारों में रहने को लोग पसंद कर रहे हैं, फिर भी परिवारों में एकता बनी रहे, परस्पर अविश्वास न हो और कटुता का भाव न हो ऐसा प्रयास करना चाहिए। परिवार में कभी-कभी आपसी मनमुटाव ही नहीं होता, अपितु शारीरिक बीमारियाँ भी बढ़ जाती हैं। डिप्रेशन जैसी बीमारी ज्यादा देखने में आ रही है। इन सब की जड़ में जो मूल कारण है वह हमारा रहन-सहन तो है ही लेकिन उनके साथ में विभिन्न दूषित मानसिकता वाली पश्चिमी विचारधारा का प्रकोप है। वर्तमान में बन रही पिक्चरों का भी प्रभाव है। मोबाइल का प्रचलन बढ़ने से लोग शास्त्रों के अध्ययन करने से दूर हो रहे हैं। एक ही परिवार में यदि पाँच लोग हैं तो वे आपस में बात न करके, सामंजस्य स्थापित न करके अपने-अपने मोबाइल पर लगे रहते हैं। इसलिए बिना मोबाइल के एक साथ बैठना, खाना खाने से आपसी प्यार बढ़ता है।

वर्तमान में सनातन मूल्यों के विपरीत वामपंथ की विचारधारा बढ़ रही है। इस विचारधारा का नाम है- 'पिंजरा तोड़'। इस विचारधारा के अंतर्गत कुत्सित मानसिकता वाले लोग आज के नवयुवक और नवयुवतियों को अपने जाल में फँसा रहे हैं। उनका कहना है कि प्राचीन परंपरा एक पिंजरा है, घर की मर्यादा में रहना एक पिंजरा है, सनातन मूल्यों का पालन करना एक पिंजरा है। इससे आज के युवकों को बाहर आना चाहिए अपने स्वतंत्र रूप से रहना, विवाह करना, अपनी विचारधारा को प्रकट करना इसका मूल उद्देश्य है। वास्तव में यह विचारधारा पश्चिम से प्रभावित है और हमारी भारतीय संस्कृति को नष्ट करने वाली है। आज हमें अपने नवयुवकों को इससे जागरूक करके दूर रखने की जरूरत है।

3. पर्यावरण पूरक जीवन शैली- आज हम अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर पर्यावरण को बहुत क्षति पहुँचा रहे हैं। विवाह-पार्टियों में प्लास्टिक से बनी हुई डिस्पोजल का प्रयोग करते हैं, घर में प्लास्टिक से बने हुए पन्नी-पॉलिथीन का प्रयोग करते हैं। वास्तव में इससे पर्यावरण को बहुत क्षति हो रही है, हमें इनके प्रयोग को वर्जित करना चाहिए।

4. स्व के प्रति जागरण- हमें स्व के उपयोग का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करना चाहिए। चाहे वह स्वदेश हो चाहे वह स्वदेशी वस्तु हो। यह भाव होना चाहिए कि मैं सर्वदा अपने देश में निर्मित वस्तुओं का ही प्रयोग करूँगा। मेरे देश का भोजन, मेरे देश की दवाई, मेरे देश की संस्कृति, मेरे देश के कपड़े, मेरे देश का पेय पदार्थ, मेरे देश का दंत मंजन, साबुन आदि का ही प्रयोग करूँगा। इससे स्वदेशी सामान

के प्रयोग करने की प्रेरणा मिलेगी और लोगों को रोजगार भी मिलेगा।

5. नागरिक कर्तव्य और नागरिक शिष्टाचार– हम सभी को जितना अपने अधिकारों के प्रति सजग रहना चाहिए उससे अधिक अपने कर्तव्यों के पालन के प्रतीक भी जागरूक रहना चाहिए। जब हम अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे तो हम एक अच्छे नागरिक कहलाएँगे।

अच्छे शासन के पाँच उद्देश्य

देश में अच्छे शासन को देश की खुशहाली के लिए पाँच उद्देश्यों का पालन करना शासन की जिम्मेदारी होती है।

1. अच्छा शासन– 2014 से पहले अच्छे शासन के रूप दिखाई नहीं दिए लेकिन 2014 के बाद एक कर्मठ, तपस्वी, देशभक्त की सरकार आई और उन्होंने देश के विकास के लिए बहुत सारे कार्य किये हैं। भारत की इस राष्ट्रप्रेमी सरकार के लिए प्रसिद्ध अखबार 'संडे गार्जियन' में लिखा था कि भारत में 800 साल बाद ही एक अच्छा शासन आया है। इस शासन में देश के चौमुखी विकास के लिए पूरा प्रयास हो रहा है।

वास्तव में अखबार की बात को देखा जाए तो यह तथ्य सही भी है। हमें भी ज्ञात है कि 2014 से पहले देश में हर जगह बम फूट रहे थे, अपहरण की घटनाएँ निरंतर हो रही थीं, आतंकवादी और उग्रवादी अपने जोरों पर थे लेकिन आज यह स्थिति नहीं है। पहले बसों में लिखा होता था ''आपकी सीट के नीचे बम हो सकता है, कृपया जाँच कर बैठें'' लेकिन इस तरह की सूचना अब दिखाई नहीं देती। 2014 के बाद नई सरकार आने से विदेश नीति में प्रभावी कदम उठाया गया है। सच्चाई में चीन भारत से भौतिक विकास में अनेक क्षेत्रों में बड़ा है लेकिन भारत ने उसका डटकर मुकाबला किया है। यह उदाहरण भारत ने गलवान में चीनी सैनिकों को आहत करके अच्छी तरह दिखा दिया है।

2. विदेश नीति– 2014 के बाद भारत ने अपने देश की विदेश नीति में सुधार किया है। अब कोई भी विदेशी शासक भ्रमण के लिए आता है तो उसे गीता ग्रंथ भेंट किया जाता है, गंगा आरती में सम्मिलित कराया जाता है, हमारे मंदिरों के दर्शन कराए जाते हैं। इसका उद्देश्य है अपनी संस्कृति से उन्हें अवगत कराना और अपने भौतिक संसाधनों से परिचित कराना।

3. देश का विकास– भारतीय संस्कृति से प्यार करने वाली सरकार के आ जाने से गत 10 वर्ष से भारत का निरंतर सांस्कृतिक और भौतिक विकास हो रहा है। युवाओं के लिए नए-नए रोजगार सृजित किए जा रहे हैं। देश के भौतिक विकास में जगह-जगह पुलों का निर्माण, रेल की लाइनों का बिछाना, सड़कों का निर्माण निरंतर हो रहा है। गरीब लोगों को घर बना कर दिए जा रहे हैं, गैस सिलेंडर दिए जा रहे हैं, अंत्योदय योजना के अंतर्गत अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को लाभ देना जरूरी माना जा रहा है।

4. विभिन्न योजनाओं का सूत्रपात– वर्तमान केंद्रीय सरकार ने ही पहले की नेताओं की भूल सुधारते हुए जम्मू-कश्मीर में नासूर बनी 370 धारा को समाप्त कर दिया है, तीन तलाक प्रथा को समाप्त कर दिया है। लगातार 80 करोड जरूरतमंद लोगों को राशन वितरित किया जा रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में सुधार लाने के लिए 'नई शिक्षा नीति 20' को लागू किया है। स्वाधीनता का अमृत महोत्सव मनाया गया, देश में यवन आक्रांताओं के नाम पर बनी विभिन्न सड़कों के नाम को और नगरों के नाम में परिवर्तन किया गया है और हर घर तिरंगा का नारा दिया गया। 'जी 20' में सहभागिता करके विश्व में अपना परचम फहराया है। संसद में संकुल की स्थापना यानी धर्म दंड की स्थापना की है। पत्रकार, तकनीकी, और बौद्धिक वर्ग के चुने हुए विशिष्ट प्रतिभावान लोगों को सम्मान दिया गया है। 22 जनवरी 2024 में अयोध्या में राम मंदिर की स्थापना तो हर भारतीय के हृदय को जीतने वाला कार्य है।

5. सुशासन– सरकार अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए सबके साथ समान व्यवहार का बीड़ा उठाया जा रहा है। इसीलिए वर्तमान शासक ने 'सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास' का नारा दिया है।

नागरिकों के कर्तव्य

हमारे भारतीय संविधान में जहाँ हमें एक ओर मूल अधिकार दिए हैं, वहीं हमें कर्तव्य का बोध कराने के लिए भी प्रेरित किया गया है। उस कर्तव्य की पूर्ति तब तब तक पूरी नहीं हो सकती जब तक हम सरकार के सही चयन में अपने मताधिकार प्रक्रिया का पालन करते हुए वोट देने के लिए सम्मिलित नहीं होते। केवल वोट ही नहीं देना अपितु स्वयं को प्रतिबद्ध करके अपने परिवार को सचेत करते हुए समाज में जन जागरण करना और राष्ट्र की भलाई हेतु कार्य करने वाले दल को अपना मत देना। ❒

ग्रीष्म ऋतु का आहार-विहार

■ किरण गुप्ता

मानव जीवन ईश्वर की सबसे बड़ी देन है। इसे स्वस्थ व प्रसन्न रखना मानव का पुनीत कर्तव्य है। मानव शरीर को प्रकृति प्रदत्त ऋतुओं के अनुसार चलाना स्वस्थ शरीर की कुंजी है। हमारे देश में मूलतः 6 ऋतु होती हैं, परंतु मोटे तौर पर हम तीन ऋतुओं को समझते हैं- 1, सर्दी 2, गर्मी 3, बरसात। आजकल ग्रीष्म ऋतु चल रही है। इस ऋतु में हमारे शरीर का वात दोष सक्रिय रहता है, अतः हमारे दैनिक जीवन में हमें कुछ विशेष बातों का ध्यान रखना चाहिए ,जिससे कि हम किसी संक्रमण या रोग का शिकार न हों।आइए कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं की जानकारी लें।

1. प्रातः काल ब्रह्म मुहूर्त में उठकर कम से कम दो गिलास गुनगुने पानी को घूँट घूँट कर, बैठ कर पीना चाहिए। यदि ऊकड़ू बैठ सकें तो अति उत्तम ,अन्यथा अपने शरीर की स्थिति के अनुसार ही ग्रहण करें।
2. गुनगुने पानी के साथ नियमित रूप से तुलसी के तीन चार ताजा पत्ते धोकर टुकड़े-टुकड़े कर पानी के साथ ही ले लें। विशेष बात यह है कि तुलसी को कभी भी दांतों से नहीं चबाना चाहिए, क्योंकि इसमें पारा होता है, जो कि दांतों की जड़ अर्थात, मसूड़े के लिए नुकसानदायक है। परंतु तुलसी में एंटीऑक्सीडेंट होता है, जो शरीर में रोग निरोधी क्षमता को बढ़ाता है।
3. इसके बाद खुले स्थान ,पार्क, मैदान इत्यादि में थोड़ी देर चलना, कम से कम 15 मिनट अवश्य चलना चाहिए।
4. इसके पश्चात करीबन 20 मिनट से आधा घंटा प्राणायाम या लंबे गहरी श्वास ,अनुलोम विलोम , शारीरिक क्षमता के अनुसार ,नियमित रूप से अवश्य करना चाहिए।
5. इसके बाद 8 से 9 बजे तक प्रातः काल नाश्ता अवश्य कर लेना चाहिए।इस अल्पाहार को सात्विक व पौष्टिक ढंग से ही लेना चाहिए।
6. ठंडी वस्तुओं का या, फ्रिज के पानी का कभी उपयोग नहीं करना चाहिए।
7. इस ऋतु में पानी का सेवन अधिक से अधिक करना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को जो की स्वस्थ् या निरोगी हो, शरीर के वजन के अनुसार प्रति 20 किलो पर, 1 लीटर पानी पीना चाहिए।

उदाहरण- यदि किसी व्यक्ति का वजन 60 किलो है तो, दिन भर में उसे कम से कम तीन से साढे तीन लीटर पानी अवश्य पीना चाहिए। इस ऋतु में डिहाईड्रेशन(कमीलकतंजपवद)की समस्या के निराकरण का यह सबसे उत्तम उपाय है। दोपहर के भोजन या तीन चार बजे तक ढाई लीटर पानी अवश्य पी लेना चाहिए। जब घर से बाहर जाना हो तो साथ पानी अवश्य लेकर जाएं। इसके अलावा दोपहर के भोजन में सीजनल हरी सब्जियां व छाछ का सेवन अवश्य करना चाहिए। रात्रि भोजन सूर्य अस्त से पहले करने का प्रयास करना चाहिए।

इन सावधानियों को बरतने से हम गर्मी लू व अन्य संक्रमण के प्रकोप से निश्चित रूप से बचे रहेंगे। इस ऋतु में जहां तक संभव हो बाहर की बनी वस्तुएं भोजन व जंक का सेवन नहीं करना चाहिए। विटामिन सी का प्रयोग अधिक से अधिक करना चाहिए, जिसके लिए नींबू वाला आम का पन्ना आदि बहुत उपयोगी है। अंत में इन सब बातों का ध्यान रखने के साथ-साथ मस्तिष्क में सदैव सकारात्मक सोच व सद साहित्य का पठन अवश्य करना चाहिए। ❐

जीवन में बड़ा लक्ष्य बनाओ

■ **पूज्य सुधांशुजी महाराज,** (संस्थापक) विश्व जागृति मिशन

हर इंसान के जीवन का लक्ष्य प्रेम, आनंद और शांति है। साधारण व्यक्ति के पास इच्छाएं होती है, उदेश्य नहीं होता। लेकिन जितने बड़े आदमी होते है, उनके पास उतना ही बड़ा उद्देश्य होता है। बड़े लोग इच्छाओं में नहीं जीते हैं, बल्कि बड़े उदेश्य को लेकर जीवन जीते हैं। इसीलिए बड़ी जिंदगी कहलाती है। प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में कुछ बड़ा करने के लिए बड़ा सोचना चाहिए। कभी कभी तो व्यक्ति के जीवन में घटनाएं घट जाती है फिर भी वह विचलित नहीं होता। क्योंकि जीवन में उसका उद्देश्य निर्धारित है और जब तक वह अपने उदेश्य को प्राप्त नहीं कर लेता है, तब तक वह छोटे बड़े घटनाओं से विचलित नहीं होता। वह अपने लक्ष्य को पूरा करने में लगा रहता है। वह न तो थकता है और न तो उदास ही होता है। कहते है कि दशरथ मांझी नाम का एक व्यक्ति था। जिसने लगातार 22 वर्ष तक 25 फीट ऊँची और 30 फीट चौड़ी पहाड़ की छेनी-हथौड़ी से कटाई करके उन पहाड़ों के बीच सुरंग बनाया। उसने अपने परिश्रम से 10 किलो मीटर का रास्ता 3 किलो मीटर में बदल दिया। इसे कहते हैं जीवन का लक्ष्य।

इसके पीछे वजह यह थी कि उसकी पत्नी बहुत बीमार थी। घर से अस्पताल का रास्ता दूर होने के कारण वह अपने पत्नी को समय से अस्पताल नहीं पहुंचा सका,जिसके कारण बीच रास्ते में ही उसने दम तोड़ दी। डॉक्टर ने यह कह दिया कि यदि कुछ समय

पहले वह अस्पताल पहुंची होती, उसकी जान बच सकती थी। तभी दशरथ मांझी ने यह लक्ष्य बना लिया कि बीच में पहाड़ ही सबसे बड़ी बाधा है। न जाने यह और कितने लोंगो की जान लेगा? बताते हैं कि उसके पहले दशरथ मांझी कोयले के खाद्यान में काम करता था। उसे कटाई करने में भी महारत हासिल थी, इसलिए उसने पहाड़ को काटकर सुरंग बनाना शुरू किया। उस कार्य को करने में बहुत समस्याएं, बाधाएं आई लेकिन उसने हार नहीं मानी। वह अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद से यह लक्ष्य बना लिया कि आगे से किसी दुसरे के साथ इस तरह की घटना न घटे, जिसके लिए यह पहाड़ जिम्मेदार हो। जब वह अपने इस उदेश्य में सफल हुआ तो सभी लोग उसकी प्रशंसा करने लगे और पूरी दुनिया में उसकी चर्चा होने लगी।

इसलिए कहा जाता है कि बड़े लक्ष्य के साथ जीवन जीना चाहिए। जीवन में समस्याएं आती रहती है। यहां तक कि हर व्यक्तिके सामने खुद इतनी समस्या है कि वह उससे छुटकारा नहीं पायेगा। इसलिए छोटे छोटे समस्यायों को समस्या या बाधा मानकर उदास नहीं होना चाहिए। जब जीवन में आप बड़ा काम लेकर आगे बढ़ते हैं तो छोटी मोटी समस्या अपने आप कम हो जाती है। इसलिए ध्यान रखें, हमेशा अपने से बड़े आदमी के साथ रहना चाहिए। जितने बड़े आदमी के संपर्क में आप रहेंगे,उतनी बड़ी सोच आपकी भी होगी और उतना ही बड़ा आदमी आप भी हो जायेंगे। इसलिए कहा जाता है कि बिना स्वार्थ, निष्काम पूर्वक सेवा करते जाइए, निश्चित रूपसे सफलता मिलेगी।

जिस तरह दशरथ मांझी ने बिना स्वार्थ के, बिना लालच के इतने बड़े लक्ष्य को पूरा किया। बनाते समय उसने नहीं सोचा होगा कि मुझे पुरस्कार मिलेगा या लोग उसकी प्रशंसा करेंगे। कहने का मतलब कि जो व्यक्ति निष्काम पूर्वक सेवा करता है, ईश्वर के कार्यो में मन लगाता है तो ईश्वर भी उसे सफल बनाता है। इसलिए कर्म करें, सेवा करें औए इस उद्देश्य से अपना कार्य करें कि हमें दिखावा नहीं करना है और न तो पहली पक्ति में खड़ा होना है। अगर आगे करिए तो सिर्फ अपने लक्ष्य को आगे करिए। लोग अपने आप आपकी प्रशंसा, तारीफ करने लगेंगे। इसमें सफल होने के लिए सेवा और साधना को महत्वपूर्ण माना गया है। साधना में भी दो बातें बताई गई है। एक तो प्रभु की कृपा पाने के लिये खुद को साधो, लेकिन इसके लिए किसी एक इष्ट को मानें। आप जिस भी ईश्वर को मानते हैं, उनमें गहरा ध्यान लगायें। इसके लिए एक में सबका स्वरुप देखें और सबमें एक को महसूस करें। यही जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। ❐

सेवापथ के साधक

■ सौजन्य शुकदेव

सेवा भारती के सूत्रधार विष्णु जी का जन्म कर्नाटक में बंगलौर के पास अक्कीरामपुर नगर में 5 मई, 1933 को हुआ था। छह भाई और एक बहन वाले परिवार में वे सबसे छोटे थे। घर में सेवा व अध्यात्म का वातावरण होने के कारण छह में से दो भाई संघ के प्रचारक बने, जबकि दो रामकृष्ण मिशन के संन्यासी।

विष्णु जी का मन बचपन से ही निर्धनों के प्रति बहुत संवेदनशील था। छात्रावास में पढ़ते समय घर से मिले धन और वस्त्रों को वे निर्धनों में बांट देते थे। शुगर तकनीक में इंजीनियर बनकर वे नौकरी के लिए कानुपर आये। यहां उनका संपर्क संघ से हुआ और फिर यही उनके जीवन का लक्ष्य बन गया। प्रचारक के रूप में वे अलीगढ़, मेरठ, पीलीभीत, लखीमपुर, काशी, कानुपर आदि स्थानों पर रहे। हिन्दी न जानने से उन्हें प्रारम्भ में कुछ कठिनाई भी हुई। आपातकाल में कानपुर में उन्होंने 'मास्टर जी' के नाम से काम किया। बाद में स्वयंसेवकों पर चल रहे मुकदमों को समाप्त कराने में भी उन्होने काफी भागदौड़ की। वर्ष 1978 में उन्हें दिल्ली में प्रौढ़ शाखाओं का काम दिया गया।

इसी वर्ष सरसंघचालक बालासाहब देवरस जी ने स्वयंसेवकों को निर्धन बस्तियों में काम करने का आह्वान किया। विष्णु जी ने इसे चुनौती मानकर ऐसे स्वयंसेवक तैयार किये, जो इन बस्तियों में पढ़ा सकें। काम बढ़ने पर इसे 'सेवा भारती' नाम देकर फिर इसका संविधान भी तैयार किया। 14 अक्तूबर, 1979 को बालासाहब देवरस जी ने विधिवत इसका उद्घाटन किया। वर्ष 1989 में संघ संस्थापक पूज्य डॉ. हेडगेवार जी की जन्मशती के बाद सेवा भारती के काम को पूरे देश में विधिवत प्रारम्भ किया गया। इसके लिए दिल्ली का काम ही उदाहरण बना।

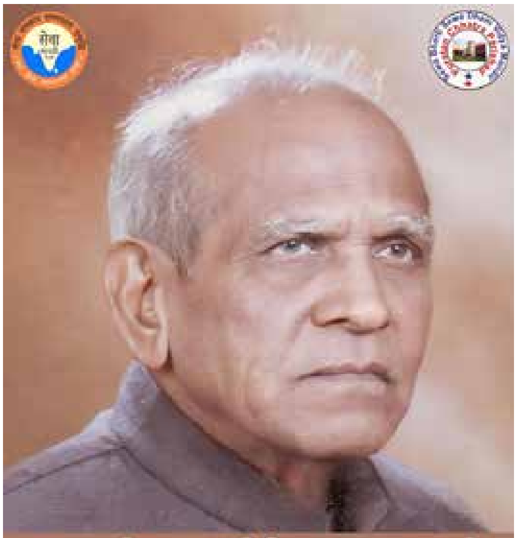

माननीय स्व. श्री विष्णु कुमार जी
5 मई 1933 - 25 मई 2009
(संस्थापक - सेवा भारती)

विष्णु जी काम यद्यपि दिल्ली में करते थे, पर उनके सामने पूरे देश की कल्पना थी। उनकी इच्छा थी कि दिल्ली में एक ऐसा स्थान बने, जहां देशभर के निर्धन छात्र पढ़ सकें। सौभाग्य से उन्हें मंडोली ग्राम में पांच एकड़ भूमि दान में मिल गयी। इस पर भवन बनाना आसान नहीं था, पर धुन के पक्के विष्णु जी ने इसे भी पूरा कर दिखाया। वे धनवानों से आग्रहपूर्वक धन लेते थे। यदि कोई नहीं देता, तो कहते थे कि शायद मैं अपनी बात ठीक से समझा नहीं पाया, मैं फिर आऊंगा। इस प्रकार उन्होंने करोड़ों रुपये एकत्र कर 'सेवाधाम' बना दिया। आज वहां के सैकड़ों बच्चे उच्च शिक्षा पाकर देश-विदेश में बहुत अच्छे स्थानों पर काम कर रहे हैं।

विष्णु जी के प्रयास से देखते ही देखते दिल्ली की सैकड़ों बस्तियों में संस्कार केन्द्र, चिकित्सा केन्द्र, सिलाई प्रशिक्षण आदि शुरू हो गये। यहां उन्हें बाबा, काका, भैया आदि नामों से आदर मिलता था। 'सेवा भारती' का काम देखकर कांग्रेस शासन ने उन्हें 50,000 रुण का पुरस्कार दिया। जब कुछ कांग्रेसियों ने इन प्रकल्पों का विरोध किया, तो बस्ती वाले उनके ही पीछे पड़ गये।

विष्णु जी अनाथ और अवैध बच्चों के केन्द्र 'मातृछाया' तथा 'वनवासी कन्या छात्रावास' पर बहुत जोर देते थे। वर्ष 1995 में उन्हें मध्य प्रदेश भेजा गया। यहां भी उन्होंने सैकड़ों प्रकल्प प्रारम्भ किये। इस भागदौड़ के कारण वर्ष 2005 में उन्हें भीषण हृदयाघात हुआ, पर प्रबल इच्छाशक्ति के बल पर वे फिर काम में लग गये। इसके बाद हैपिटाइटस बी जैसे भीषण रोग ने उन्हें जर्जर कर दिया। इलाज के लिए उन्हें दिल्ली लाया गया, जहां 25 मई, 2009 को उन्होंने अंतिम सांस ली। उनकी स्मृति में मण्प्रण शासन ने सेवा कार्य के लिए एक लाख रुपये के तीन तथा भोपाल नगर निगम ने 51,000 रुपये के एक पुरस्कार की घोषणा की है।

स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रोजेक्ट

■ आचार्य मायाराम पतंग

'स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रोजेक्ट' नाम सुनते ही लगता है कि यह किसी सरकारी संस्था की परियोजना है। सेवा भारती ने अन्य किसी प्रकल्प का नाम ऐसा नहीं रखा। सचमुच इसका श्रीगणेश एक सरकारी योजना के रूप में ही हुआ था। उन दिनों दिल्ली सरकार ने 'स्लम बस्तियों' तथा 'पुनर्वास बस्तियों' के बालकों के लिए 'स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रोजेक्ट' का विज्ञापन दिया। यमुना पार के एक सेवानिवृत्त कर्मचारी श्री जयसिंह पाल सेवा भारती से जुड़े थे, उन्हें यह प्रोजेक्ट मिला। मैं शाहदरा जिला सेवा भारती का मंत्री था। श्री जयसिंह पाल ने मुझसे संपर्क किया। योजना को कार्यान्वित करने के लिए उचित स्थान की खोज हम करने लगे। कई बस्तियों में गए। कार्य योग्य बस्ती की तलाश भी करनी थी तथा योजना के संचालन के लिए उचित भवन भी खोजना था।

मानसरोवर पार्क में एक संघ के निष्ठावान कार्यकर्ता थे श्री सत्यप्रकाश कोचर जी। कोचर जी हम दोनों को साथ लेकर दिलशाद गार्डन गए। वहां हमें मिला तीन झुग्गी बस्तियों का समूह कलन्दर कालोनी, दिलशाद विहार तथा दीपक कालोनी। एक स्थान पर तीनों मिल रही थी। वहां पेड़ के नीचे एक सज्जन चार बच्चों को पढ़ा रहे थे। वार्तालाप से ज्ञात हुआ कि वह बेरोजगार हैं। इन बच्चों को थोड़ा-सा शुल्क लेकर पढ़ाते हैं और काम ढूंढ रहे हैं। हमने उन्हें सारी योजना बताई। उन्हें बताया कि आपको मानधन (Honorarium) सेवा भारती देगी। आपको पढ़ाना तो है, शुल्क नहीं लेना है। उनका नाम था श्री विश्वनाथ जी। डीडीए की ओर से भवन पास ही बन रहा था। परियोजना हेतु संबंधित अधिकारियों से मिलकर उसे स्वीकृत करा लिया गया। इसका किराया मात्र एक रुपया तय हुआ।

केन्द्र में चौक बनाने की विधि सीखते बच्चे

फिर कार्यकर्ताओं ने तीनों बस्तियों में सर्वेक्षण कया। कलन्दर कालोनी में ऐसे परिवार रहते थे जिनका व्यवसाय अन्य बस्तियों में जाकर बन्दर नचाना या जादू दिखाना था। जब हमने उनके बच्चों को पढ़ाने की चर्चा की तो कुछ परिवारों ने यहां तक कहा कि रोजी-रोटी छोड़कर अपने बच्चों को तुम्हारे पास पढ़ने भेजेंगे तो बन्दर क्या तुम्हारा बाप नचाएगा? हम क्या भूखे मरेंगे?

फिर भी सात बच्चों से कार्य शुरू करने में सेवा भारती सफल हुई। बालवाड़ी, बाल संस्कार, बालिका संस्कार एवं सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र शुरू किए गए। धीरे-धीरे सम्पर्क बढ़ा। बस्ती की ही एक प्रौढ़ महिला मीरा को बस्ती प्रमुख का दायित्व दिया गया। साथ ही उन बच्चों को गायत्री मंत्र, सरस्वती वन्दना, प्रातः स्मरण, राष्ट्रीय गीत एवं कविताएं भी याद कराई गईं। प्रतिदिन प्रार्थना के समय अभ्यास कराया गया। शिक्षक तथा शिक्षिकाओं का प्रशिक्षण भी कराया गया।

स्ट्रीट चिल्ड्रेन अर्थात जो बच्चे किसी पाठशाला में नहीं जाते। गलियों में

खेलते हुए अपना समय नष्ट करते हैं। कूड़ा बीनना और चोरी, झपटमारी करना सीखते हैं तथा बुरे व्यसनों में फंसकर समाज को हानि पहुंचाते हैं। उनको मात्र अक्षर ज्ञान कराने से उदेश्य पूरा नहीं होता। उन्हें कुछ कमाने के साधन भी सिखाने होते हैं, ताकि वे स्वावलम्बी जीवन जी सकें।

दिलशाद गार्डन का यह केन्द्र सन् 1994 से निरन्तर कार्य कर रहा है। श्री जगदीश मेहता जी के निवास स्थान बदल जाने के पश्चात् इस महान परियोजना का कार्य माननीय मदन लाल खन्ना जी ने संभाला। खन्ना जी एक कुशल प्रबन्धक, संस्कारित एवं ध्येयनिष्ठ कार्यकर्ता हैं। उन्होंने अनेक प्रकार के कार्य प्रारंभ कर के इस प्रोजेक्ट को आगे बढ़ाया।

सरकार बदलने के बाद सरकारी अनुदान मिलना बन्द हो गया। छात्र-छात्राओं को अल्पाहार देना भी बन्द हो गया तो कठिनाई आ गई। सेवा भारती की इस विशिष्ट योजना को बन्द नहीं किया गया, अपितु मानधन तथा अल्पाहार की स्वयं व्यवस्था करके इसे और सफलतापूर्वक चलाया गया। यहां तक कि चित्रा विहार तथा झण्डेवाला में भी जो इनकी शाखाएं शुरू की थीं। उन्हें बन्द करके दिलशाद गार्डन की इस मूल परियोजना को निरन्तर आगे बढ़ाया गया। समय-समय पर गोकुलपुरी में गड़िया लोहार बस्ती में सम्पर्क बनाया तथा गाजीपुर मण्डी के निकट झुग्गी बस्ती में कार्य प्रारंभ किया जो प्रगति पर है।

आइए अब यह जानें कि यहां कौन-कौन से व्यावसायिक कार्य सिखाए जाते हैं-

- चॉक बनाना- श्याम पट पर लिखने के चॉक बनाने का प्रशिक्षण दिया जाता है। बने हुए चॉक सेवा भारती के अन्य केन्द्रों द्वारा खरीदे भी जाते हैं।
- मोमबत्ती बनाना- मोमबत्ती बनाने का प्रशिक्षण पाकर उन बच्चों को बहुत लाभ हुआ। दिवाली के अवसर पर कमाने का अच्छा

स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रोजेक्ट के लक्ष्य

- ऐसे उपेक्षित बच्चों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ना, ताकि वे समाज को संभावित हानि न पहुंचाएं।
- उनको शिक्षा तथा संस्कार देकर उनका विकास करना।
- व्यावसायिक प्रशिक्षण देकर उन्हें स्वावलम्बी तथा सक्षम बनाना।
- उनमें देशभक्ति एवं समाज सेवा की भवना भरकर उन्हें योग्य नागरिक बनाना।
- ऐसे बच्चों में बुद्धि, शक्ति, योग्यता एवं स्वाभिमान का विकास करके सफल व्यक्ति बनाना।
- बच्चों के माध्यम से ऐसे उपेक्षित एवं निर्धन परिवारों से निरन्तर सम्पर्क बढ़ाना, ताकि वे भारतीय संस्कृति से जुड़ें तथा देश के विकास में अपना योगदान दे सकें।

अवसर मिला। मोमबत्ती संस्थाओं तथा दुकानदारों को बेची जाती है।

- जूट बुनाई - जूट से बुनकर बैठने के आसन तथा सजावट का सामान बनाया जाता है।
- सूत की बुनाई - दरी तथा कुर्सी, सोफे के बिछाने के आसन बनाये जाते हैं।
- विद्युत सुधार - बिजली के सामान्य उपकरण ठीक करने का कार्य सीखकर बच्चे कुछ कमाने भी लगे हैं।
- सिलाई-प्रशिक्षण- महिलाओं का सिलाई प्रशिक्षण सम्पर्क का भी अच्छा साधन है तथा स्वावलंबन का भी साधन है। यह प्रकल्प प्रारंभ से ही निरन्तर चल रहा है।
- सौन्दर्य प्रसाधन- सौन्दर्य प्रसाधन भी एक अच्छा व्यवसाय है। अपना कार्य प्रारंभ करना खर्चीला है परन्तु इसे सीखकर बड़ी दुकानों पर खूब काम मिल जाता है।
- मोबाईल रिपेयरिंग- इस कार्य की मांग खूब है। इसे सीखकर कुछ किशोरों ने अपना व्यवसाय शुरू किया है। कुछ बड़ी दुकानों पर काम करने लगे हैं।
- आर्ट एण्ड क्राफट - चित्रकला, पेन्टिंग तथा घरेलू बेकार वस्तुओं से कुछ सुन्दर तथा उपयोगी वस्तु तैयार करना अच्छी कला है। इसमें बालक तथा बालिकाएं सभी रुचि ले रहे हैं।
- कम्प्यूट प्रशिक्षण- कम्प्यूटर प्रशिक्षण में वे बच्चे सीखने आते हैं, जो आस-पास के विद्यालयों में नौंवी, दसवीं श्रेणी तक पहुंच चुके हैं। कम्प्यूटर सीखकर नौकरी के मार्ग सब तरफ खुल जाते हैं।
- छपाई-कढ़ाई - सूती कपड़ों पर डिजाईन बनाने के लिए कढ़ाई तथा छपाई का कार्य होता है। कुछ बच्चे डिजायन को तैयार करते हैं जिनसे कपड़ों पर छपाई की जाती है। प्रायः चादर, कवर, तकिए, मेजपोश या गिलाफ छापे जाते हैं।
- संगीत प्रशिक्षण- एक संगीत शिक्षक के द्वारा भजन, राष्ट्रीय गीत तथा सामाजिक लोक गीतों का प्रशिक्षण, बालक-बालिकों को दिया जाता है। विशेष आयोजनों के लिए भी ऐसे बच्चे संगीत प्रस्तुत करते हैं। प्रतिभाशाली बच्चे प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन पाकर अच्छे गायक भी बन सकते हैं।

नियमित कार्यक्रम

प्रायः सभी कार्यक्रम अपने अलग समय में सम्पन्न किए जाते हैं। फिर भी गायत्री मंत्र, सरस्वती वन्दना, योग व्यायाम, गीत आदि सभी में समान रूप से होते हैं।

- मंगलवार को बस्ती के अभिभावकों की बैठक होती है जिसमें बस्ती के प्रमुख परियोजना प्रभारी तथा कुछ कार्यकर्ता भाग लेते हैं। मास में एक बार हवन भी किया जाता है, जिसमें बस्ती के भाई-बहनों को भी आमंत्रित किया जाता है।
- शनिवार को शिक्षिका अभ्यास वर्ग होता है तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम किया जाता है।
- दूसरे शनिवार को उस मास में जिन बच्चों, शिक्षिकाओं या कार्यकर्ता का जन्मदिन होता है, सब मिलकर मनाते हैं। यह आयोजन श्री प्रदीप गंडोत्रा जी सम्पन्न करवाते हैं। प्रबन्ध के लिए 14 (चौदह) कार्यकर्ताओं की एक कार्यकारिणी है। मास में अन्तिम रविवार को इसकी बैठक होती है।
- पूर्णिमा- प्रत्येक पूर्णिमा को महिलाओं के द्वारा भजन, कीर्तन का आयोजन किया जाता है। प्रतियोगिता की दृष्टि से यदि आवश्यक हो तो प्रत्येक मंगल को कार्यक्रम की तैयारी की जाती है।

त्योहार मनाने की परम्परा

भारतीय संस्कृति में प्रतिदिन

हर तिथि का महत्व होता है। कुछ आवश्यक परम्परा इस परियोजना में निश्चित की गई है। वर्ष के प्रारंभ में जनवरी में मकर संक्रान्ति मनाते हैं तथा गणतंत्र दिवस मनाते हैं। बसन्त पंचमी पर सरस्वती पूजन किया जाता है तथा सामूहिक विवाह के आयोजन में सहयोग करना होता है। स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोपण होता है तथा राष्ट्रीय गीत गाए जाते हैं। कई दिन पहले से तैयारी की जाती है। रक्षाबन्धन पर सभी छात्र-छात्राएं परस्पर राखी बांधते हैं, कार्यकर्ताओं के साथ जाकर बस्ती में भी अपरिचितों को राम-राम करते है तथा राखी बांधकर परिचय बढ़ाया जाता है।

गणेश उत्सव पर बस्ती के लोगों को गणेश पूजन के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। कन्या पूजन का कार्यक्रम बहुत महत्वपूर्ण है। बस्ती की कन्याएं एकत्र करके अपने कार्यकर्ताओं के घर पूजन के लिए ले जाई जाती हैं। उन्हें भोजन के साथ उपहार भी दिए जाते हैं। दिवाली, दशहरे के आस-पास मेलों के आयोजन होते हैं। परियोजना के लिए कार्यकर्ता जाते हैं। इनमें स्टॉल भी लगाते हैं तथा प्रतियोगिताओं में भी भाग लेते हैं। सरकार द्वारा आयोजित ऐसे खेलों में चार बार स्ट्रीट चिल्ड्रेन को पुरस्कृत किया गया।

केन्द्र में चित्रकला का प्रशिक्षण लेती छात्राएं

हुडको संस्था द्वारा आयोजित एक प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय तथा चौथा स्थान इस परियोजना की बालिकाओं ने प्राप्त किया, जिन्हें केन्द्रीय मंत्री श्री हरदेव पुरी ने पुरस्कृत एवं सम्मानित किया। स्मरणीय है कि इन बालिकाओं को सम्मान पत्र के साथ नकद राशि (प्रथम -15000, द्वितीय- 10000, तथा चौथा - 5000) भी प्रदान की गई।

बस्ती की जनता के साथ मिलकर वाल्मीकि जयन्ती, कबीर जयन्ती तथा सन्त रविदास जयन्ती के उत्सव मनाए जाते हैं। कभी-कभी बस्ती के लोगों के साथ सहभोज का कार्यक्रम भी करते हैं जिसमें क्षेत्र के स्वयंसेवक भी जुड़ते हैं।

श्री मदनलाल खन्ना जी के साथ 2014 से श्री ज्ञान प्रकाश जी इस परियोजना का कार्य कुशलतापूर्वक संभाल रहे हैं। उन्होंने अपनी क्षमता से अनेक दानदाता जोड़े हैं। अब भी सरकारी दर पर ही मानधन दिया जाता है। प्रशिक्षार्थियों को अल्पाहार दिया जाता है तथा सभी आवश्यक व्यय नियंत्रित किए जाते हैं। इस प्रोजेक्ट पर मासिक सत्तर हजार (70000) खर्च होता है जो ज्ञानप्रकाश जी स्वयं एकत्र करते हैं। शिक्षिका पद से सेवानिवृत्त होने के उपरान्त उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुषमा गुप्ता भी उन्हें पूर्ण सहयोग करती हैं।

यह परियोजना सेवा भारती के उदेश्यों को सफलता की ओर ले तो जा रही है। साथ ही साथ समाज के उपेक्षित वर्ग को मुख्यधारा से निरन्तर जोड़ रही है। इस परियोजना से सेवा भारती बस्तियों में बहुत प्रसिद्धि और सफलता प्राप्त कर रही है। ❐

जीव के लिए जल बचाइए

■ डॉ. महेश परिमल

जो लोग पानी की बरबादी करते हैं उनसे मैं यही पूछना चाहता हूँ कि क्या उन्होंने बिना पानी के जीने की कला सीख ली है, तो हमें भी बताएं, ताकि भावी पीढ़ी-बिना पानी के जीना सीख सके। नहीं तो तालाब के स्थान पर मॉल बनाना क्या उचित है? आज हो यही रहा है। पानी को बरबाद करने वाले यह समझ लो कि यही पानी तुम्हें बरबाद करके रहेगा। एक-एक बूँद पानी यानी एक बूँद खून, यही समझ लो। पानी आपने बर्बाद किया, खून आपके परिवार वालों का बहेगा। क्या अपनी आँखों को इतना सक्षम बना लोगे कि अपने ही परिवार के किसी प्रिय सदस्य का खून बेकार बहता देख पाओगे? अगर नहीं, तो आज से ही नहीं, बल्कि अभी से पानी की एक-एक बूँद को सहेजना शुरू कर दो। अगर ऐसा नहीं किया, तो मारे जाओगे।

वैश्विक तापमान यानी ग्लोबल वार्मिंग आज विश्व की सबसे बड़ी समस्या बन चुकी है। इससे न केवल मनुष्य, बल्कि धरती पर रहने वाला प्रत्येक प्राणी त्रस्त है। ग्लोबल वार्मिंग से निपटने के लिए दुनियाभर में प्रयास किए जा रहे हैं, लेकिन समस्या कम होने के बजाय साल-दर-साल बढ़ती ही जा रही है। चूंकि यह एक शुरुआत भर है, इसलिए अगर हम अभी से नहीं संभले तो भविष्य और भी भयावह हो सकता है। आगे बढ़ने से पहले हम यह जान लें कि आखिर ग्लोबल वार्मिंग है क्या।

क्या है ग्लोबल वार्मिंग?

जैसा कि नाम से ही साफ है, ग्लोबल वार्मिंग धरती के वातावरण के तापमान में लगातार हो रही बढ़ोतरी है। हमारी धरती प्राकृतिक तौर पर सूर्य की किरणों से ऊष्मा (हीट, गर्मी) प्राप्त करती है। ये किरणें वायुमंडल से गुजरती हुई धरती की सतह से

टकराती हैं और फिर वहीं से परावर्तित (रिफलेक्शन) होकर पुनः लौट जाती हैं। धरती का वायुमंडल कई गैसों से मिलकर बना है जिनमें कुछ ग्रीनहाउस गैसें भी शामिल हैं। इनमें से अधिकांश धरती के ऊपर एक प्रकार से एक प्राकृतिक आवरण (लेयर, कवर) बना लेती हैं। यह आवरण लौटती किरणों के एक हिस्से को रोक लेता है और इस धरती के वातावरण को गर्म बनाए रखता है। गौरतलब है कि मनुष्यों, प्राणियों और पौधों के जीवित रहने के लिए कम से कम 16 डिग्री सेल्शियस तापमान आवश्यक होता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि ग्रीन गैसों में बढ़ोतरी होने पर यह आवरण और भी सघन (अधिक मोटा होना) होता जाता है। ऐसे में यह आवरण सूर्य की अधिक किरणों को रोकने लगता और फिर यहीं से शुरू हो जाते हैं ग्लोबल वार्मिंग के दुष्प्रभाव।

क्या है ग्लोबल वार्मिंग की वजह?

ग्लोबल वार्मिंग के लिए सबसे ज्यादा जिम्मेदार तो मनुष्य और उसकी गतिविधियाँ ही हैं। अपने आप को इस धरती का सबसे बुद्धिमान प्राणी समझने वाला मनुष्य अनजाने में या जानबूझकर अपने ही रहवास को खत्म करने पर तुला हुआ है। मनुष्य जनित (मानव निर्मित) इन गतिविधियों से कार्बन डायआक्साइड, मिथेन, नाइट्रोजन आक्साइड इत्यादि ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा में बढ़ोतरी हो रही है जिससे इन गैसों का आवरण सघन होता जा रहा है। आवरण सूर्य की परावर्तित किरणों को रोक रहा है जिससे धरती के तापमान में वृद्धि हो रही है। वाहनों, हवाई जहाजों, बिजली बनाने वाले संयंत्रों (प्लांटस), उद्योगों इत्यादि से अंधाधुंध होने वाले गैसीय उत्सर्जन (गैसों का एमिशन, धुआं निकलना) की वजह से कार्बन डायआक्साइड में बढ़ोतरी हो रही है। जंगलों का बड़ी संख्या में हो रहा विनाश इसकी दूसरी वजह है। जंगल कार्बन डायआक्साइड की मात्रा को प्राकृतिक रूप से नियंत्रित करते हैं, लेकिन इनकी बेतहाशा कटाई से यह प्राकृतिक नियंत्रक (नेचुरल कंटरोल) भी हमारे हाथ से छूटता जा रहा है।

इसकी एक अन्य वजह सीएफसी है जो रेफ्रीजरेटर्स, अग्निशामक (आग बुझाने वाला यंत्र) यंत्रों इत्यादि में इस्तेमाल की जाती है। यह धरती के ऊपर बने एक प्राकृतिक आवरण ओजोन परत को नष्ट करने का काम करती है। ओजोन परत सूर्य से निकलने वाली घातक पराबैंगनी (अल्ट्रावायलेट) किरणों को धरती पर आने से रोकती है। वैज्ञानिकों का कहना है कि इस ओजोन परत में एक बड़ा छिद्र हो चुका है जिससे पराबैंगनी किरणें सीधे धरती पर पहुंच रही हैं और इस तरह से उसे लगातार गर्म बना रही हैं। यह बढ़ते तापमान का ही नतीजा है कि धुरवों (पोलर्स) पर सदियों से जमी बर्फ भी पिघलने लगी है। विकसित या अविकसित देश, हर जगह बिजली की जरूरत बढती जा रही है। बिजली के उत्पादन (प्रोडक्शन) के लिए जीवाष्म ईंधन (फासिल फयूल) का इस्तेमाल बड़ी मात्रा में करना पड़ता है। जीवाष्म ईंधन के जलने पर कार्बन डायआक्साइड पैदा होती है जो ग्रीनहाउस गैसों के प्रभाव को बढ़ा देती है। इसका नतीजा ग्लोबल वार्मिंग के रूप में सामने आता है।

ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावः

और बढ़ेगा वातावरण का तापमान

पिछले दस सालों में धरती के औसत तापमान में 0.3 से 0.6 डिग्री सेल्शियस की बढ़ोतरी हुई है। आशंका यही जताई जा रही है कि आने वाले समय में ग्लोबल वार्मिंग में और बढ़ोतरी ही होगी।

समुद्र सतह में बढ़ोतरी

ग्लोबल वार्मिंग से धरती का तापमान बढ़ेगा जिससे ग्लैशियरों पर जमी बर्फ पिघलने लगेगी। कई स्थानों पर तो यह प्रक्रिया शुरू चुकी है। ग्लैशियरों की बर्फ के पिघलने से समुद्रों में पानी की मात्रा बढ़ जाएगी जिससे साल-दर-साल उनकी सतह में भी बढ़ोतरी होती जाएगी। समुद्रों की सतह बढ़ने से प्राकृतिक तटों का कटाव शुरू हो जाएगा जिससे एक बड़ा हिस्सा डूब जाएगा। इस प्रकार तटीय (कोस्टल) इलाकों में रहने वाले अधिकांश लोग बेघर हो जाएंगे।

मानव स्वास्थ्य पर असर

जलवायु परिवर्तन का सबसे ज्यादा असर मनुष्य पर पड़ेगा और कई लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा। गर्मी बढ़ने से मलेरिया, डेंगू और यलो फीवर (एक प्रकार की बीमारी है जिसका नाम ही यलो फीवर संक्रामक रोग-एक से दूसरे को होने वाला रोग) बढ़ेंगे। वह समय भी जल्दी ही आ सकता है जब हममें से अधिकांश को पीने के लिए स्वच्छ जल, खाने के लिए भोजन और श्वास (नाक से ली जाने वाली सांस की प्रोसेस) लेने के लिए शुद्ध हवा भी नसीब नहीं हो।

पशु-पक्षियों व वनस्पतियों पर असर

ग्लोबल वार्मिंग का पशु-पक्षियों

और वनस्पतियों पर भी गहरा असर पड़ेगा। माना जा रहा है कि गर्मी बढ़ने के साथ ही पशु-पक्षी और वनस्पतियां धीरे-धीरे उत्तरी और पहाड़ी इलाकों की ओर प्रस्थान (रवाना होना) करेंगे, लेकिन इस प्रक्रिया में कुछ अपना अस्तित्व ही खो देंगे।

शहरों पर असर

इसमें कोई शक नहीं है कि गर्मी बढ़ने से ठंड भगाने के लिए इस्तेमाल में लाई जाने वाली ऊर्जा की खपत (कंजम्शन, उपयोग) में कमी होगी लेकिन उसकी पूर्ति एयर कंडिशनिंग में हो जाएगी। घरों को ठंडा करने के लिए भारी मात्रा में बिजली का इस्तेमाल करना होगा। बिजली का उपयोग बढ़ेगा तो उससे भी ग्लोबल वार्मिंग में इजाफा ही होगा।

ग्लोबल वार्मिंग से कैसे बचें?

ग्लोबल वार्मिंग के प्रति दुनियाभर में चिंता बढ़ रही है। इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि पिछले साल का नोबेल शांति पुरस्कार पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में कार्य करने वाली संयुक्त राष्ट्र की संस्था इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेंट चेंज (आईपीसीसी) और पर्यावरणवादी अमेरिका के पूर्व उपराष्ट्रपति अलगोर को दिया गया है। लेकिन सवाल यह है कि क्या पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में काम करने वालों को नोबेल पुरस्कार देने भर से ही ग्लोबल वार्मिंग की समस्या से निपटा जा सकता है? बिल्कुल नहीं। इसके लिए हमें कई प्रयास करने होंगे।

1. सभी देश क्योटो संधि का पालन करें। इसके तहत 2012 तक हानिकारत गैसों के उत्सर्जन (एमिशन, धुएं) को कम करना होगा।
2. यह जिम्मेदारी केवल सरकार की नहीं है। हम सभी भी पेट्रोल, डीजल और बिजली का उपयोग कम करके हानिकारक गैसों को कम कर सकते हैं।
3. जंगलों की कटाई को रोकना होगा। हम सभी अधिक से अधिक पेड़ लगाएं। इसमें भी ग्लोबल वार्मिंग के असर को कम किया जा सकता है।
4. टैक्नीकल डेवलपमेंट से भी इससे निपटा जा सकता है। हम ऐसे रेफ्रीजरेटर्स बनाएं जिनमें सीएफसी का इस्तेमाल न होता हो और ऐसे वाहन बनाएं जिनसे कम धुआं निकलता हो। ❐

(इंडिया वाटर पोर्टल से साभार)

जिंदगी खुलकर जियो

एक गिलहरी रोज अपने काम पर समय से आती थी और अपना काम पूरी मेहनत और ईमानदारी से करती थी! गिलहरी जरुरत से ज्यादा काम कर के भी खूब खुश थी, क्योंकि उसके मालिक, जंगल के राजा शेर ने उसे दस बोरी अखरोट देने का वादा कर रखा था!

गिलहरी काम करते करते थक जाती थी तो सोचती थी, कि थोड़ी आराम कर लूँ, वैसे ही उसे याद आता कि शेर उसे दस बोरी अखरोट देगा! गिलहरी फिर काम पर लग जाती! गिलहरी जब दूसरे गिलहरियों को खेलते देखती थी, तो उसकी भी इच्छा होती थी कि मैं भी खेलूं, पर उसे अखरोट याद आ जाता, और वो फिर काम पर लग जाती! ऐसा नहीं कि शेर उसे अखरोट नहीं देना चाहता था, शेर बहुत ईमानदार था! ऐसे ही समय बीतता रहा ण्ण्ण्ण। एक दिन ऐसा भी आया जब जंगल के राजा शेर ने गिलहरी को दस बोरी अखरोट दे कर आज़ाद कर दिया! गिलहरी अखरोट के पास बैठ कर सोचने लगी कि अब अखरोट मेरे किस काम के? पूरी जिन्दगी काम करते-करते दाँत तो घिस गये, इन्हें खाऊँगी कैसे! यह कहानी आज जीवन की हकीकत बन चुकी है! मनुष्य अपनी इच्छाओं का त्याग करता है, पूरी ज़िन्दगी नौकरी, व्यापार, और धन कमाने में बिता देता है! 60 वर्ष की उम्र में जब वो सेवा निवृत्त होता है, तो उसे उसका जो फन्ड मिलता है, या बैंक बैलेंस होता है, तो उसे भोगने की क्षमता खो चुका होता है! तब तक जनरेशन बदल चुकी होती है, परिवार को चलाने वाले बच्चे आ जाते है! क्या इन बच्चों को इस बात का अंदाजा लग पायेगा की इस फन्ड, इस बैंक बैलेंस के लिये कितनी इच्छायें मरी होंगी। कितनी तकलीफें मिली होंगी? कितनें सपने अधूरे रहे होंगे? क्या फायदा ऐसे फन्ड का, बैंक बैलेंस का, जिसे पाने के लिये पूरी ज़िन्दगी लग जाये और मानव उसका भोग खुद न कर सके! इस धरती पर कोई ऐसा धनी अभी तक पैदा नहीं हुआ जो बीते हुए समय को खरीद सके! इस लिए हर पल को खुश होकर जियो व्यस्त रहो, पर साथ में मस्त रहो सदा स्वस्थ रहो। ❐

4000 संस्कृत गृह बने

■ शिरीष देव पुजारी

- भारतीय संस्कृति का रक्षण तो सभी चाहते हैं, किन्तु यह कैसे होगा यह नहीं जानते।
- भारत को विश्वगुरु बनते देखना तो सभी चाहते हैं, किन्तु मार्ग क्या होगा नहीं जानते।
- संस्कृत भारती यह दोनों लक्ष्य पाना जानती है साधन के रूप में संस्कृत का उपयोग कर।

इसलिए जो-जो यह होते देखना चाहते हैं वे एक साथ काम में जुट जाएं यह निवेदन है। हम सभी से समय की मांग करते हैं। यदि समय देंने मे कोई कमी रहती है तो धन या साधनों से उसकी पूर्तता हो सकती है।

संस्कृतभारती ने यह कार्य 1981 में बेंगलूरु से आरम्भ किया है और न केवल भारत के 80% जिलों में फैलाया है अपितु 26 देशों में अपनी उपस्थिति से संस्कृत प्रेमियों को आकर्षित किया है। शिशुओं से लेकर वृद्धों तक, महिलाओं से पुरुषों तक, अनपढ़ से शिक्षितों तक, सबको संस्कृत बोलना संभव हो रहा है। लगभग 4000 घर "संस्कृतगृह'' बने हैं, जिनमें जन्म लेने वाले शिशुओं की मातृभाषा संस्कृत है। लगभग 50 हजार भारतीय नागरिक संस्कृत भाषा में सम्भाषण करते हैं।

सम्भाषण जानने वालों को लेखन का प्रशिक्षण दिया जाता है। अनुवाद कार्यशालाओं के द्वारा अनुवादक तैयार किए जाते हैं। विभिन्न भाषाओं में लिखा हुआ उत्तम साहित्य संस्कृत में अनुदित कर उसे छापा जाता है। अबतक अनुदित और मौलिक ग्रंथ मिलाकर संस्कृत भारती ने 300 से अधिक पुस्तकों को छापा है।

लेखन के अभ्यास के पश्चात् सभी को शास्त्र शिक्षण प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया जाता है। इस प्रकार समाज में शास्त्रों को जानने वालों की संख्या बढ़े ऐसा संस्कृत भारती का प्रयास है। न केवल लोग शास्त्रों को जाने अपितु शास्त्र सम्मत जीवन यापन करें, ऐसी संस्कृत भारती की चाह है।

संस्कृत भारती के अखिल भारतीय कार्यक्रमों में भारत के सभी प्रान्तों से आएं हुए विभिन्न भाषा-भाषी नागरिक, संवाद और उद्बोधन के लिए जब संस्कृत का ही उपयोग करते हैं तो भारत की एकात्मता का रक्षण संस्कृत भाषा से संभव है, यह विश्वास और दृढ़ हो जाता है। स्वतंत्रता के कितने वर्षो बाद यह संभव हो रहा है, इसकी समीक्षा सभी को करनी चाहिए। अभी भी

घरों में होनेवाले संस्कारों के लोप को रोकने संस्कृत की सहायता अनिवार्य है। इसलिए संस्कृत घरों में पहुंचाने का संस्कृत भारती का आग्रह है। छोटे छोटे संस्कृत के वाक्य, संस्कृत की कहावतें या सरल शब्दों में गहन जीवन मूल्यों को प्रकट करने वाले सुभाषितों के कारण होने वाले संस्कारों के सामाजिक फैलाव से ही संस्कृती दृढ़ होगी। ❒

निंदा के दुष्परिणाम

राजा पृथु एक दिन सुबह-सुबह घोड़ों के तबेले में जा पहुँचे। तभी वहाँ एक साधु भिक्षा मांगने आया। सुबह-सुबह साधु को भिक्षा मांगते देख पृथु क्रोध से भर उठे। उन्होंने साधु की निंदा करते हुये, बिना विचारे तबेले से घोड़े की लीद उठाई और उसके पात्र में डाल दी। साधु भी शांत स्वभाव का था, सो भिक्षा ले वहाँ से चला गया और वह लीद कुटिया के बाहर एक कोने में डाल दी। कुछ समय उपरान्त राजा पृथु शिकार के लिये गये। पृथु ने जब जंगल में देखा कि एक कुटिया के बाहर घोड़े की लीद का बड़ा सा ढेर लगा हुआ है। उन्होंने देखा कि यहाँ तो न कोई तबेला है और न ही दूर-दूर तक घोड़े दिखाई दे रहे हैं। वह आश्चर्यचकित हो कुटिया में गये और साधु से बोले, "महाराज! आप हमें एक बात बताइये, यहाँ कोई घोड़ा भी नहीं, न ही तबेला है, तो यह इतनी सारी घोड़े की लीद कहा से आई?''

साधु ने कहा, "राजन्! यह लीद मुझे एक राजा ने भिक्षा में दी है। अब समय आने पर यह लीद उसी को खानी पड़ेगी।''

यह सुन राजा पृथु को पूरी घटना याद आ गई। वे साधु के पैरों में गिर क्षमा मांगने लगे। उन्होंने साधु से प्रश्न किया कि हमने तो थोड़ी-सी लीद दी थी, पर यह तो बहुत अधिक हो गई?

साधु ने कहा कि हम किसी को जो भी देते हैं, वह दिन-प्रतिदिन प्रफुल्लित होता जाता है और समय आने पर हमारे पास लौटकर आ जाता है, यह उसी का परिणाम है। यह सुनकर पृथु की आँखों में अश्रु भर आये। वे साधु से विनती कर बोले "महाराज! मुझे क्षमा कर दीजिये। मैं आगे से ऐसी गलती कभी नहीं करूँगा। कृपया कोई ऐसा उपाय बता दीजिये, जिससे मैं अपने दुष्ट कर्मों का प्रायश्चित कर सकूँ।''

राजा की ऐसी दुःखमयी हालत देखकर साधु बोला कि "राजन्! एक उपाय है। आपको कोई ऐसा कार्य करना है, जो देखने में तो गलत हो, पर वास्तव में गलत न हो। जब लोग आपको गलत देखेंगे, तो आपकी निंदा करेंगे। जितने ज्यादा लोग आपकी निंदा करेंगे, आपका पाप उतना हल्का होता जायेगा। आपका अपराध निंदा करने वालों के हिस्से में आ जायेगा।

यह सुनकर राजा पृथु ने महल में आकर बहुत सोच-विचार किया और अगले दिन सुबह से शराब की बोतल लेकर चौराहे पर बैठ गये। सुबह-सुबह राजा को इस हाल में देखकर सब लोग आपस में राजा की निंदा करने लगे कि, कैसा राजा है? कितना निंदनीय कृत्य कर रहा है, क्या यह शोभनीय है? आदि-आदि! निंदा की परवाह किये बिना राजा पूरे दिन शराबियों की तरह अभिनय करते रहे। इस पूरे कृत्य के पश्चात जब राजा पृथु पुनः साधु के पास पहुँचे, तो लीद के ढेर के स्थान पर एक मुट्ठी लीद देख आश्चर्य से बोले, "महाराज! यह कैसे हुआ? इतना बड़ा ढेर कहाँ गायब हो गया?'' साधु ने कहा, "यह आपकी अनुचित निंदा के कारण हुआ है राजन्! जिन-जिन लोगों ने आपकी अनुचित निंदा की है,, आपका पाप उन सबमें बराबर-बराबर बंट गया है।

फिर राजा बोले महाराज, फिर ये मुट्ठी भर बचा क्यूँ?? ये क्यूँ नहीं बंटा? तो फिर ऋषि बोले राजन, ये तुम्हारा कर्म है। जितना तुमने मेरे भिक्षा पात्र मे मेरे खाने के लिए दिए थे उतना तो तुम्हें खाना ही पड़ेगा। कोई कितना भी उपाय, दान, पुण्य करले उसका कर्म दोष कट तो जाएगा पर उसका मूल नष्ट नहीं होगाण्ण उतना तो भरना ही पड़ेगा। जब हम किसी की बेवजह निंदा करते हैं, तो हमें उसके पाप का बोझ भी उठाना पड़ता है। तथा हमें अपने किये गये कर्मो का फल तो भुगतना ही पड़ता है। अब चाहे हँसकर भुगतें या रोकर। हम जैसा देंगे, वैसा ही लौटकर वापिस आयेगा। ❐

भगवान का संकेत

एक बार एक किसान जंगल में लकड़ी बिनने गया तो उसने एक अद्‌भुत बात देखी। एक लोमड़ी के दो पैर नहीं थे, फिर भी वह खुशी खुशी घसीट कर चल रही थी। यह कैसे ज़िंदा रहती है जबकि किसी शिकार को भी नहीं पकड़ सकती, किसान ने सोचा। तभी उसने देखा कि एक शेर अपने दांतो में एक शिकार दबाए उसी तरफ आ रहा है। सभी जानवर भागने लगे, वह किसान भी पेड़ पर चढ़ गया। उसने देखा कि शेर, उस लोमड़ी के पास आया। उसे खाने की जगह, प्यार से शिकार का थोड़ा हिस्सा डालकर चला गया।

दूसरे दिन भी उसने देखा कि शेर बड़े प्यार से लोमड़ी को खाना देकर चला गया। किसान ने इस अद्‌भुत लीला के लिए भगवान का मन में नमन किया। उसे अहसास हो गया कि भगवान जिसे पैदा करते हैं उसकी रोटी का भी इंतजाम कर देते हैं। यह जानकर वह भी एक निर्जन स्थान चला गया और वहां पर चुपचाप बैठ कर भोजन का रास्ता देखता। कई दिन गुज़र गए, कोई नहीं आया। वह मरणासन्न होकर वापस लौटने लगा। तभी उसे एक विद्वान महात्मा मिले। उन्होंने उसे भोजन पानी कराया, तो वह किसान उनके चरणों में गिरकर वह लोमड़ी की बात बताते हुए बोला, महाराज, भगवान ने उस अपंग लोमड़ी पर दया दिखाई पर मैं तो मरते मरते बचा; ऐसा क्यों हुआ कि भगवान् मुझ पर इतने निर्दयी हो गए ? महात्मा उस किसान के सर पर हाथ फिराकर मुस्कुराकर बोले, तुम इतने नासमझ हो गए कि तुमने भगवान का इशारा भी नहीं समझा इसीलिए तुम्हें इस तरह की मुसीबत उठानी पड़ी। तुम ये क्यों नहीं समझे कि भगवान् तुम्हे उस शेर की तरह मदद करने वाला बनते देखना चाहते थे, निरीह लोमड़ी की तरह नहीं। हमारे जीवन में भी ऐसा कई बार होता है कि हमें चीजें जिस तरह समझनी चाहिए उसके विपरीत समझ लेते हैं। ईश्वर ने हम सभी के अंदर कुछ न कुछ ऐसी शक्तियां दी हैं जो हमें महान बना सकती हैं।

भगवान कृष्ण भी यही उपदेश गीता में समझाते हैं। ❒

लालसा

– सरोजिनी चौधरी

मैं बन पंछी उड़ूँ गगन में
क्षितिज पार तक मैं जाऊँ
उड़ते-उड़ते दूर कहीं पर
जाकर मैं नव मित्र बनाऊँ,

यहाँ स्वार्थ और अपना-अपना
सबको कहते देखा है
शायद परहित सेवा करना
अब का मानव भूला है,

चाँद-सितारों की नगरी में
ऐसा कुछ नहीं होता है
चमक रहे नित दूजे के हित
सच है नहीं ये धोखा है,

यही लालसा मन में मेरे
ऐसा मैं कुछ कर जाऊँ
कुछ तो पीड़ा हरूँ किसी की
किसी का हित मैं कर जाऊँ।

कई जन्म संघर्ष किया तब
मानव तन पाया मैंने
करूँ काम हितकर मैं जग में
यह संकल्प किया मैंने। ❒

सौंदर्य की परीक्षा

पूर्वी विभाग के इन्द्रप्रस्थ जिले के श्रीराम सेवा केन्द्र पर 24,25 अप्रैल दोनों दिन सौंदर्य की परीक्षा का आयोजन किया गया। परीक्षण प्रान्त से शिवानी सिंह जी ने और कविता भास्कर ने किया। विभाग से भारती बन्सल और जिले की बहनें, निरिक्षिका उपस्थित रहीं। दस सेवित जनों ने परीक्षा दी। बहुत सुन्दर आयोजन रहा। ❒

स्वास्थ्य-संसद

– रंजित दीक्षित

मोती जैसा इक इक दाना, विटामिनों का बड़ा ख़ज़ाना
मुझे चाहते वो सब बच्चे, जो खाते हैं बढ़िया खाना
अब चुनाव के दिन हैं आए, मैं हूं कैंडिडेट पुराना
वोट मुझे ही देना बच्चो, मटर पे अपनी मोहर लगाना।

मैं गाजर हूं मैं भी चुनाव मैदान में हूं
मैं डाक्टर की डाइटीशियन की पहचान में हूं
मैं लाल परी मैं सुंदर हूं आकर्षक हूं
मैं विटामिनों की खान हूं सेहत वर्धक हूं।

सब्ज़ी आचार मुरब्बा मैं गाजर हलवा
दृष्टि को ज्योतिर्मय रखना मेरा जलवा
इस बार चुनावों में मुझको जितवा देना
प्यारे बच्चो गाजर पे मोहर लगा देना।

मैं हरी हरी पालक मैं भी उम्मीदवार
मैं विटामिनों का आयरन मिनरल का बाज़ार
मैं बीमारी पर करती हूं भीषण प्रहार
मेरी फौलादी शक्ति ही मेरा प्रचार।

मैं स्वस्थ-रक्त संवाहक हूं संचालक हूं
मुझको हर खाने में डालो मैं पालक हूं
अच्छी सेहत के लिए मुझे अपनाना है
प्यारे बच्चो पालक पर मोहर लगाना है।

मैं लाल टमाटर लाइकोपीन से भरा हुआ
मैं हैल्दी फ़ूड मैं भी चुनाव में खड़ा हुआ
प्रतिरोधक क्षमता लाइकोपीन से पाओगे
आशा है तुम सब मुझ पर मोहर लगाओगे।

कौलैस्ट्रोल कम कर हार्ट-फ्रेन्डली कहलाती हूं
मेथी हूं मैं फुर्तीला जिस्म बनाती हूं
कौलैस्ट्रोल कम कर हार्ट-फ्रेन्डली कहलाती हूं

गर शूगर ब्ल्ड-प्रैशर कंट्रोल में लाना है
प्यारे बच्चो मेथी पर मोहर लगाना है।

मोमो पिज्ज़ा बर्गर चुनाव में आते हैं
सब बच्चे इनको लपक लपक कर खाते हैं
बच्चो चटकारे ले बाहर जब खाते हो
सेहत को जन्क फ़ूड से क्षति पहुंचाते हो।

जन्क फ़ूड को ना ना ना ना, उत्तम खाना है अपनाना
घर का खाना न खाने का, नहीं चलेगा कोई बहाना
गाजर मेथी मटर आदि पर, बच्चो अपनी मोहर लगाना
स्वास्थ्य-सजग बन सर्वोत्तम ही
स्वास्थ्य की संसद में पहुंचाना।। ❐

समस्याओं के समाधान का केन्द्र

अप्रैल 2010 में रघुवीर नगर के श्री राम मन्दिर में प्रसन्ना सलाह केन्द्र की शुरुआत की गई। सलाह केन्द्र के प्रारंभ करने का उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों तथा परिवारों की सहायता करना है जो मानसिक, पारिवारिक तथा व्यक्तिगत समस्याओं से ग्रस्त हैं। कार्यकर्ता बहनें उनकी समस्याओं को सुनकर, उनका समाधान करने की कोशिश करती हैं। वार्तालाप करके उन्हें उचित मार्गदर्शन देती हैं। आज यह केन्द्र अनेक लोगों के लिए समस्या निवारण एवं भविष्य में सुखी जीवन के लिए वरदान से कम नहीं है। उचित परामर्श एवं समस्या समाधान के लिए निम्न स्थान पर वर्णित समयानुसार सम्पर्क कर सलाह पायें समाधान मिटायें-

स्थान

राम मन्दिर, रघुवीर नगर, (वीरवार- प्रातः 11 00 से 1.00 बजे)

बी-2/2, मियाँवाली नगर, नई दिल्ली-110087 (शुक्रवार- प्रातः 11.00 से 1.00)

सम्पर्क सूत्र- श्रीमती पायल बंसल (मो. 9650746668)

हवन के साथ कंप्यूटर केंद्र का श्रीगणेश

बड़े हर्ष का विषय है कि बाबासाहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर जयंती के शुभ अवसर पर मदनदास गांधी सेवा केन्द्र शिवविहार करावल नगर जिले में माननीय विभाग अध्यक्ष श्रीमान डॉक्टर अरविंद जी के सौजन्य एवं उनके करकमलों से एक कंप्यूटर केंद्र का शुभारंभ हवन करके किया गया।

इस अवसर पर प्रांत कार्यकारिणी सदस्य श्रीमान नरेश जी की विशेष उपस्थिति रही। इस कार्यक्रम के साथ में ही बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर जी की 133वीं जयंती भी बड़े उत्साहपूर्वक मनाई गई। इस अवसर पर श्रीमान नरेश जी का प्रेरक उद्बोधन सभी समाज के बंधु भगिनियों को सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। समाज के सभी बंधु भगिनियों ने क्रमवार रूप में डॉ. भीमराव आंबेडकर जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि का कार्यक्रम भी किया। अंत में सभी को डॉ. भीमराव आंबेडकर जी के कैलेंडर और प्रसाद देकर का कार्यक्रम का समापन किया। ❐

कलंदर कॉलोनी में कन्यापूजन

सेवा भारती स्ट्रीट चिल्ड्रन प्रकल्प, कलंदर कॉलोनी, दिलशाद गार्डन में 17 अप्रैल 2024, दिन बुधवार को रामनवमी कार्यक्रम के शुभ अवसर पर प्रकल्प एवं भारत विकास परिषद, दिल्ली के द्वारा केंद्र में अध्ययन करने वाली 40 बालिकाओं का सामूहिक रूप से कन्यापूजन किया गया। इस कार्यक्रम में केंद्र में अध्यापन का कार्य करने वाली शिक्षिकाओं श्रीमती मोहिनी शर्मा एवं श्रीमती मीरा देवी ने भी भाग लिया। कार्यक्रम के उपरांत बालिकाओं को उपहार स्वरूप एक एक वॉटर बोतल, एक मैंगो फ्रूटी तथा एक-एक चिप्स का पैकेट इत्यादि वितरित किया गया। और इस प्रकार भारत विकास परिषद के सहयोग से कन्यापूजन का उत्सव संपन्न हुआ। ❐

शिक्षकों और विद्यार्थियों ने किया मातृछाया का दौरा

दिल्ली विश्वविद्यालय के गुरु तेग बहादुर खालसा कॉलेज के विद्यार्थियों और शिक्षकों ने कॉलेज के समाज कल्याण कार्यक्रम के तहत 29 अप्रैल 2024 को सेवा भारती मातृछाया का दौरा किया। वे निराश्रित बच्चों की देखभाल और पालन-पोषण तथा शिशु वाटिका में गरीब बच्चों की शिक्षा के लिए मातृछाया द्वारा किए गए कार्यों से अत्यधिक प्रभावित हुए। संयोग से यह मातृछाया परिसर का उनका दूसरा दौरा था। उन्होंने बच्चों के साथ खेल-खेल में बातचीत की। दिल्ली विश्वविद्यालय के कॉलेजों के विद्यार्थी और शिक्षक नियमित रूप से मातृछाया का दौरा करते रहे हैं। विद्यार्थियों ने मातृछाया की

गतिविधियों से जुड़ने की इच्छा व्यक्त की। मातृछाया प्रमुख श्री योगेश जी ने कॉलेज टीम को मातृछाया की विभिन्न गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। श्रीमती नीरू महाजन ने उन्हें मातृछाया की नर्सरी दिखाई। कॉलेज टीम शिशु वाटिका के बच्चों के लिए फल और रंग भरने वाली किताबें लेकर आई थी और बच्चों ने उन रंग भरने वाली किताबों का भरपूर आनंद उठाया। ❐

BANSAL WIRE INDUSTRIES LTD.

BANSAL

Stainless Steel Wires - High/Medium Carbon Steel Wires
(Black and Galvonised)

Mfrs. : Low Carbon Steel Wires, Profile/Shaped Wires
(Black and Galvonised)

H.B. HHB & G.I. WIRES

Bansal Wire Industries Ltd.
F-3, Shastri Nagar, Delhi-110052 (India)
Tel. : +91-11-23648401, 23651890-91-92-93
Email : info@bansalwire.com, www.bansalwire.com

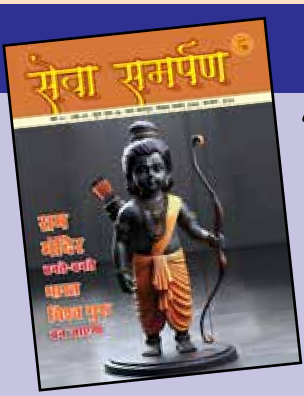

विज्ञापन के लिए आग्रह

'सेवा समर्पण' पत्रिका समाज एवं संस्कृति के प्रति समर्पित, प्रतिष्ठित वर्ग, कार्यकर्ता एवं युवा वर्ग के बीच पिछले 41 वर्ष से 'नर सेवा-नारायण सेवा' के मूल मंत्र को लोकप्रिय बना रही है। इस पत्रिका द्वारा परिवार प्रबोधन, भारतीय जीवन शैली और संस्कारों से युक्त समसामयिक विषयों के साथ-साथ बच्चों, युवा वर्ग एवं महिलाओं संबंधी विषय सामग्री के द्वारा स्वावलम्बन, शिक्षा और संस्कारों को जन-जन तक पहुंचाने का विशेष कार्य हो रहा है। समय- समय पर किसी एक बिन्दु को केन्द्रित कर विशेषांक निकालने की योजना रहती है।

आपसे प्रार्थना है कि अपने प्रतिष्ठान का विज्ञापन प्रकाशित कराएं और 50,000 पाठकों तक अपनी पहुंच बनाएं। यह पत्रिका सरकारी कार्यालयों, मंत्रालयों, पुस्तकालय, व्यापारी वर्ग, कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र, अन्य गैर-सरकारी संगठनों, अस्पताल इत्यादि स्थानों पर जाती है।

संपर्क करें- सेवा भारती, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001

फोन - 011-23345014-15

विश्व पृथ्वी दिवस

विश्व पृथ्वी दिवस (22 अप्रैल) के अवसर पर सेवा भारती, पश्चिमी विभाग, उत्तम जिला केन्द्र में पर्यावरण संरक्षण गतिविधि द्वारा सत्र का आयोजन किया गया। इसमें श्री राजेन्द्र तिवारी जी, श्री राजीव बत्रा जी ने प्लास्टिक के प्रयोग से पृथ्वी पर पड़ने वाले दुष्परिणामों के बारे में चर्चा की तथा उसके प्रयोग कैसे कम किया जा सकता है उस पर भी अपने विचार रखे। साथ ही वहां आए बच्चों और युवाओं को कपड़ों के थैले भेंट स्वरूप दिए। इसी प्रयास के अंतर्गत 10 किलो प्लास्टिक बोतल फॉर चेन्ज को पुनर्चक्रण के लिए दिया गया। हर घर हरित घर से प्रेरित होते हुए केन्द्र में कुछ पौधे भी लगाए। ❑

दत्ता जी ने गुरुद्वारे में टेका मत्था

गत दिनों राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माननीय सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले जी ने नवम् गुरु तेगबहादुर जी महाराज के प्रकाश पर्व के निमित्त गुरुद्वारा शीशगंज (दिल्ली) में माथा टेका। इस अवसर पर माननीय सरकार्यवाह जी ने कहा- "गुरुद्वारा शीशगंज का इतिहास में प्रेरणादायी स्वर्णिम पृष्ठ है। गुरु तेगबहादुर जी भारत के धर्म व संस्कृति की रक्षा के लिये, अपने अनुयायियों की शहीदी होने के पश्चात भी हिम्मत से डटे रहे।" ❑

रजिस्टर्ड क्रमांक 40605/1983
तिथि 6-7 मई, 2024, प्रकाशन तिथि-5 मई, 2024
Posted at - LPC, DELHI RMS, DELHI-110006

डाक रजिस्टर्ड नं. U(C)-166/2022-24
DL(ND)-11/6188/2022-23-24
अग्रिम शुल्क के बिना प्रेषण

"AGARWAL PACKERS AND MOVERS LTD."

(नर सेवा - राष्ट्र सेवा)

APML

Nindra Daan Kendra for Truck Chaalak

(A Unique Concept to reduce Accidents on Roads by Trucks)

(ट्रक ड्राईवर देश का आंतरिक सिपाही है)

- 4,12,432 accidents happened yearly in India.
- Out of these accidents 1,53,972 lost their lives.
- Our Kendra saving 21 lives monthly on road to avoid sleep deprivation and stress.
- Empowering Drivers with respectful environment to provide them sound sleep with safe and secure parking space along with free barber, washroom facilities and all are free.

Pran Vayu Vahan

(कोविड के समय चल चिकित्सा)

- Modified trucks into "Oxygen Providers Van" during highest peak of COVID -II.
- Container converted into clinic within 24hrs.
- It is equipped with all facilities i.e. Oxygen cylinder, Beds, Oxygen Concentrator etc.
- Saved 543 Lives to provide Oxygen to highly vulnerable patients in association with Sewa Bharti.

Community Empowerment

(सामाजिक समरसता और अंत्योदय का जीवंत उदाहरण)

- Reducing inequalities to provide access to socially backward people to build temple of Sant Shiromani Kabir Ji Maharaj in Nalwa (Hisar) for their Spiritual well beings.
- Providing livelihood and skills to differently abled and financially backwards.
- Girl empowerment.
- Education to highly vulnerable children from villages and tribes.
- Adopted approach to reduce Carbon Emission to conserve environment.

09 300 300 300 www.agarwalpackers.com

मुद्रक/संपादक/प्रकाशकः डॉ. शिवाली अग्रवाल द्वारा सेवा प्रकाशन न्यास के लिए 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा शक्ति प्रिन्टर्स 1/3001, गली न.-16, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-32, से मुद्रित।